

चाँद
चढ्यो
गिगनार

रामनिवास शर्मा

राजस्थानी भाषा साहित्य एक संस्कृति अकादमी है आगित् आगित् गद्यय ग् प्रकाशित

© रामनिवास शर्मा

प्रथम संस्करण 1989

मूल्य पैंतालिस रुपय मात्र

प्रकाशक

कृष्ण जनसेवा एण्ड को

दाऊजी मन्दिर भवन बाकानेर

मुद्रक

सोखला प्रिंटस

मुगल निवास, चन्न सागर बाकानेर

व्याकरण अमिन भारता

Chand Chdhyo Gignar by Ram Niwas Sharma

Rs 45 00

विगत

① मुहागण भागण -	13
2 मूमल ✓ -	19
③ बोलता चितराम	28
4 खूण री बारी ✓	32
5 जीबती जूण ✓	36
⑥ आतम बोध -	40
⑦ मौत जेडी चुप्पी	45
⑧ रिक्कू	49
⑨ जीवण री आस्था	54
10 लम्प पास्ट ✓	59
⑪ मौत री दस्तक अमूजता जाव	63
⑫ बटवारा	67
13 दुलवा कासू कहियो न जाय	72
14 चाद चढयो गिगनार ✓	79

चाँद
चढ्यो
गिगनार



कृष्ण जनसेवी एण्ड को , वीकानेर

चाँद
चढ्यो
गिगनार

म्हारी दीठ

म्हारी काण्वा सामाजिक जीवन र उतार चढाव रो लेखो है। समाज य घटन आळी घटनावा न हू खुली दीठसू देखू वा माथ विचार करू तन करू अर घटना र भूळ कारण न खोजन रो जतन करू। इ कारण म्हारी ण्वा समाज र च्याहू मेर घूमती रेव। पण हू आ नी कय मक्कू क म्हारी ण्वा समाज रो लेखो तोखो है। नुकी दीठ राखण र खातर कइ काण्वा माज र साम परसन खडिया कर देव अर वारो पढूतर समाज मू चाव। इ कारण वे काण्वा मनोविज्ञान री मानीज।

उपयासा माथ म्हारी दीठ इतिहास कानी जाव। इतिहास री घण री घटनावा म्हार सामै घणा उलझयोडा परसन खडिया कर देव। हू वारसना रो पढूतर खोजू पण इतिहास बठ मौन हूव। वा परसना रो हू विगत टनावा र सार समाधान करण रो जतन करू। इतिहास माय परसन अर डूतर अता ही अधूरा है वा उलझयोडा है जतो इ सान रो मन। इ कारण उपयास रा पातर इतिहासकार र सामै परसन खडिया कर देव।

म्हारी चिंतन री दोहरी धारावा हूवण र कारण हू समाज री विसम रिस्थितिया माय झुचते इ सान री मानसिक स्थिति माथ लिखू अर दूज तानी बीत्योडी घटनावा माथ विचार करू। जक इ सान रा खुर खोज ही मूट्य्या है वारी मानसिक स्थिति रो चिंतन करू समाधान खोजू।

म्हारो जतन ओ रेव क हू समाज री विसम स्थिति सू झुझत इ सान री सामाजिक मानसिक अर आर्थिक स्थिति रो खुला सो करू।

जग रो सार दो बाता माय है याद राखणू अर भूलणू। ईश्वर एहसान अर मोत न सदा याद राखणू अर आपर कियोड उपकार न भूल ज्यावणू।

राजस्थानी भासा साहित्य अर सस्कृति अकादमी बीकानेर सू मन इ पोथी प्रकासन माय आर्थिक सहयोग दिमा इ कारण बीरो हू आभारी हू।

श्री कृष्ण जनसवी रा भी आभारी हू जक र सहयोग सू पोची छपी ।
श्री दीपचन्द साखला (साखला प्रिन्टस) अर दूजा भायला जका रो जाण
अण जाण समय बराबर सहयोग मिलता रह्यो है वारा भी आभारी हू ।

बसन्त पंचमी 2045
बीकानेर

रामनिवास शर्मा

समस्यावा सू
जूभूण माय
सा'रो अर
प्रेरणा देवन आळी
घर घिराणी
श्रीमती कौशल शर्मा
न

सुहागण-भागण

पाटे माथ तनाई बणाय न पीपळी रोप्योडो ना । घीरा दिवो चम हो । तुगाया गणा गाठा पर न कमरिया कसुमल ओडणा व घाघरा पर न गाल धरो बणाय न पीपली र चामर वटी ही । वूढी पिडताणी करवा चौथ री सुहाग री काणी कव ही । वीर हाथ माथ आम्वा हा । मगळी तुगाया आप आपर हाथ माथ जाग्या लय राख्या हा जर काणी सुण ये । लुगाया वी मुहाग री काणी सुण हे जक र खातिर चार गाव माथ एक तडपन रव । पिडताणी केव ही क भाव री चाथ आवण आगी है । जकला घण तरक है । मज मूना हैं ।

मधु जणा चार र जरग दय न पाछी आय न कळसिया पीपळी कन राख न हाथ गोव्या अर मन माथ मत्त मुहागण रण री जामाम मागी । पछ आर माथ वडा । एक तम्बा मो जीरा हा । जक माथ आणे पित्तग लाग्याना हो जक माथ एक मिनग पूठ फर न सूतो हा । वित्रती रा लटदू चम ये । मिनग न ईहा सूता देख न मधु र लिलाट माथ तान मळ आवा लाग्या । हाथा र ताम्बोना म ती मूना पड्या । के वरडान रा मुग घ मोळी पडगी । ताळवा मूखवा लाग्या । होठ माथ माथ ही वड वडावा लाग्या । हिय माथ माप फिरण लाग्या । मन माथ साच्या—वे क र्क पूरा वात्या ही नी । डीळ माथ हाथ फेरया नी कोनी नित्रागे ह्य न वाली-सूयग्या क? एक आवाज अपडी ह' अर चुप्पी । ग तित मिनयाग्या । आज करवा चौथ है । वारणू र्क न पित्तग माथे साग्या । माथार र डोल माथ हाथ फरण लागी । जणा मधु न मालूम पत्निया क आर डोल माथ ता भावना रा लेन हा कानी । थाक्याना वळ मी पत्निया है । मधु मुस्त हुय नै डान माथ रात्र नाखली । नूवा कपडा गाल न पिलग र मार राख दीना । वड स्वाच मू वसी बुझाय दी ।

मधु अपूटी फिरन मावण लागगी । उण वगत न र्कण लागगी तको जाज हाथ मू अलगा ह्य न मन र माथ बाल ना ।

मधु बनी हुई । वर मिळताना हा । नील दिन दूणू जर रात चौगूणू निव्वरता जावा हा । जणा वा आगरा मूना वाच माथ र्कण ना मू माथ

गुद ही इस पत्नी । छाती माथ हाथ मुळती परती अर जणा जाघा माथ हाथ परती तो गुद ही मदहोण हूय जावता । इण बगत फटाफट सगार्ह हूई अर व्याध हूया । सासर जाय न देख्या क घर माय नी कोई लुगार्ह है अर नी दूजो मिनख । पक्कत बना प्रनी दोय जणा । तिनग सिङ्घ्या एक छोरो आवतो अर घर रो छोटा माटो काम करन पाछा चट्या जावता । आ मोट्यार चक्कोडो आवता अर जीम न मोय जावतो । लुगार्ह न लुगार्ह नी मानतो एण हाळण समभता । ईहा ही घणा घरस चूप चाप निबलग्या । हार न मधु पढण माय मन लगायो अर बी ए करन मास्टरणी बणण री साची । पण नीकरी वठ । आगो तिन उवास्या खावता खावता ही निसर जाव । मिनख रा तो दरसण ही दुरलभ हूयग्या । तिनग सिङ्घ्या छारो नीबतो जक न ही जलगा कर तियो अर काम काज साहू जुगार्ह राग दी । मन मसोती देखी जणा नीकराणी वतायो क जठ ताई हू घडी दाय घडा मिनख नू हताई नी करू ता म्हारो मन नी लागी । आगो दिन घर र काम अर टात्ररा री हताई माय निबल जाव बीनणी मा पडत जी र ता जवान हा ना राग । मगमो काम हाथ र ईमार सू त्राण चाव । था मू बदई पूरा जाल है क नी । छेडग्यानी तो नीनी दावात्री नी करता हुसा । नीकराणी री याता सुणता ही मधु रा मन ममदर ताण उमड पडता । आग्या माय चौमरा आवण सरू हूय जावता । मधु मन री पोण न रोक न मुळवतो पण

तिन कटणू मुम्बल हुवता । रात ता छाती आगे पडी ही रवती ।

मधु मास्टरणी बणगी । दिन सारा कटणा सरू हूयग्या । हताया मू जीव हलका रवतो । रात रो सगळो भार मास्टरण्या नू हताई करणन हळका कर लवता । पण एक नूब मास्टर र आया पड मधु रो तिल जग्घा ही छोडग्यो जक तिन पत्र मधु रो मन सौ मी हाथ ऊचा उछळ्या लाग्या । नूब मास्टर रो आपर घर र आग ग्यानी पडी कोटडी माय रवण रा दतजाम कर तियो । तकलीक रो मग्गियोणे मास्टर त्या री छिया माय जाराम मूरवणू सरू कर दियो ।

पडिताणी केव ही—सठा रो घेटा दिनुग बगा उठन नहाय घोय न करवा चौथ रो नाम लय न काम सळटावण साहू गिदी माथ वठग्यो । दण आला दयग्या लवण आळा तयग्या । उलङ्घ्याडो सूत सूलभग्यो । ढळती रात र माग सग रा छारो घाडे माथ वठ न गाव कानी टुर पत्तिया । घर कूचा घर मज्जळा ।

पडित जी तीन चार दिना खातर तिल्ली गया । प्रीतम कोटवी माय पत्तिया पडियो जख्खार पत् हो । मधु प्रीतम न आपर घर बुलाय लिया । अठ ही पत्ता जक मू म्हारा मन ताग ज्यागी ।

प्रीतम कुर्मी माथ बठ न अखवार रा पाना पळटवा लाग्या। मधु साम बठन मुईटर वणावण लागगा। मधु रा घ्यान उचटतो जावो हा। आगत्या सनाया र साग हिल ही पण मुईटर नी वणीज हा। आम्ह्या रो लम्बो काजळ मन्होसी मू विखरो हो। काना माय एक मुर मराहट ही। कालज माथ थपक्या पड ही। छाती साम र साग मधरी चाल मू हाल ही।

बहुनजी। आपन सी कानी लाग क ? मन तो क्षीणी भीणी ठण्ड राग।

नी। हू तो छाया र नीच टाउजर पेन राख्यो है लहगा ऊचो कर न टाउजर दिखावती बाला।

'ओ चूडीदार पजाम पिडल्यामा पमीजता हुसी

'नी'

प्रीतम सोचता रयो। देखता रया। मन माय बोल्या 'कती चतर है' फेर बो-यो— थार मरीरन मू की तकलीफ कौनी हूव ?

आदम्ह्या अर तुगाया खातर अळगा अळगा हव मन तांठा ही कौनी हा' अचम्म मू भर न प्रीतम वाट्या।

थोडी ताळ पछ मधु घाची— जाआं मास्टर जी ताम भेला पडतर आवण मू पला माय ली आरी माय जाय न ताम र्हेय न आई। ताम र लार गळ मिल्वोडी मम सान्ध री तस्वीर मटयाची ही। ताम सलती वळा ताम रा पत्ता हाथ मू फिमळ फिमळ न पड हा त्रिया जाध सुसाडी। मधु घाची मास्टर जी आ ताम घणा अरमाना मू खरीनी ही पण हालताई मू रा उद् घाटन नी हुयो। आज थारे हाथा मू पली पोत खेलेली जाय है।'

मीपरी ना एक बाजी खेलेली जी। मधु बोली मास्टर जी म्हारा जीव घटराव सलता जाव ही अर आपर बब्जे रा चटन खोदती जान ही।

आ देय न प्रीतम री आख्या थपक्या लागगी। मास्टर जी रो हाथ पकन मुत्रां छाता माथ फिराती घाची— थे अठ हाथ फेरता रवा।

विडताणी जी कव हा— करवा चौथ न सेठा रा बरो धरे पूग्यो। मठा रा मन घणू हरव मू भरा ज्यो। मा राजी हूयगी। घण रा तो मूडा हा विठ भयो। मिनी मू रच्योडा हाथ चौगणा लाय न्यग्या। पूची पमीजवा नागगी। माथ गी टीकी पमीन मू गीची हूयग्या। आम्ह्या प्यार मू नाचण नागगी।

पीरे एक रात गया पछ करवा चौथ रो जाणी मूणी । चंद्रमान भरग दय न भाजती सी चूरमै दाल मू भरत गाल न माळिय माय गर्द । सठा रो वगे सात्र मू भरियो आस्या वारण कानो पाडता दास्या । घण वारणु दक्षिया । चौथ माता रो परगाद मूट माय त्रिया जर मान मू बोली— बोळा दिना मू आया । ईहा मुस्त क्रिया तीगो हो ?

म्हारी घण आज रो रात ही घार वन गुजरती आग बोल्या— कान मन लाग उठाव न लय ज्यावला । थ पछाड राय गाय न रोबोता ।

धुको धार मू ञा मू —घण वाली—'घान आ क्रुगण कठ मू पच्यो । आया ता मत्त र्क्या ही साग रवाना जर करवा चौथ पूजा ला ।

सठा रा वट बो-या— जा बात बीनी है म्हारा घर धिराणा म्हान आवती वेळा मारग माय एक माय भायता मिल्यो । म्ह बिन दुत्कार दियो क तू म्हारा रास्तो वाट न क्रुसूगण क्यु कर । गाला दिना मू घर जावा हा । काळो नाग पण फुलाय न बोल्यो—हू सी वरसा र जीवन मू घावयोडो बळण यातर ताव हो पण तू टाक दिया । टाक्याचो वाम नी करणू । ई कारण हू वळ तो बीनी पण तन जरूर टसस्यु ।

ह नाम त्रेयता—हू बोल्या — ह नाग देवता थ मन एक रात रा जीवन देवो । हू म्हार मा वाप मू मिनल्यु गीरी रो मूडो देण त्यु । नाग त्वता चौगीस घडी रो मोलत दा जर अे वाचा त्रिया वि जा बात घण न छोड न किट्टे ही नी क बोता । वाचा तय न नाग त्रेवता जक मारग मू आया हा मागी मारग पाछा चल्योग्या । बोन गीरी विश्वाम आग्या क बीनी ?

घण बोली— आपा सदा ही रमता र वाला । चौथ माता सत्त ही भना करली ।

आधी रात ताही चौपड पामा सत्र न दो यू जणा मूय गया । वारण कन खडी चौथ माता वि ता सू भरियाडा खडी ही । साच ही—ज सेठा र वट न ना वचायो ता आपणू विश्वास ही उठ ज्यामी । पर आपा न कुण पूज सी । मसार मू घरम रो बात ही उठ ज्यासी ।

मधु टसकती बोली— म्हारी आ पीडा नासूर सी बढती जाव । जक दिन म्हारा हाथ भून सू आपर झोन सू लागीज्यो बी दिन पाछ म्हारा मन आवळ वाकळ हूयग्यो । हू अपण आप न भूलगी । हू सत्त सुहागण हू पण म्हारो मन आज ही कुवारा हा । म्हारो शरीर व्याव न तरम । समाज म्हारा याव करिया पर मन मू कुवारी हू ।

प्रोतम मधुर डाल माथ हाथ परना जाव हा । मधुर डाल माथ एन सुरसराहट दोडगा लागी । मधुर जीवन रो आ आज पलो तिन है जण काई मरद बीर डील माथ हाथ परे है जब माथ पुग्मत्व है । आज ताही मधु ण तरह र हाथ न तरम ही । आज वा मगळी कमर बाणो चाव ही । बरमा मू भी भीचारी मनस्या आज तुनाम र माग फलना जाव ही अर क साग ही मधु आपरी गुध बुध भूलगा ।

माझळ रात गुजरया पल मानिय री पडया माथ पाठा नागचणू मुखरियो । पत्नी पत्नी माथ बाडूरत छिडकाव करियाटा मिन्वा । मन री ताप मिग्ना नाग टवना विचार करिया सर्ग रा बटा तू म्हारी जलन मिटायनी पर काई करू बचना म बाघ्याडा ह । दूमरा पडा माथ दूध मू छलियो बटारा मित्या । दूध पावन बोल्यो—घारा मदा ही भलो हुव म्हारी भूय मिटायना पण नाद करू वाचा रावना पडमी । तीजी पडी माथ दाळ चूरमू मित्या । दाल चूरमू ग्याय न नाग दवता टगवता टसकता आग चाल्या । मालिय र माथ बडिया ।

सठा र बट री बहू लट आपर पलग मू नाच लगराध न मूती हा । चाथ माता नागण वण न बट बठगी । नाग दवता हाळ हाळ आग चाल हा । नागण फूवार मार न चाली—अर तू ठमै बीनी । घारा घरम दूव ज्याव सो । माटयार रन मुता लुगादन तू मरत ह्य न देग । तू पाछा जाव है बीनी ?

नाग दवता री मति वावडा बीनी । जाग बरता गया । चौथ माता रात ग्यायन बाली—नमवहराम । घार तन रा जलन मिटाय दी । दूध पाया । चूरमू दाळ खुजाई ताद घारा भूय नी मिटा । पर तू क चाव ? एक पावणे ही आग बडिया ता भस्म ह्य जावला ।

नाग दवता ठमिया बीना । चौथ माता जाग मू फूवार मारी । नाग दवता जळन भसम ह्यग्या ।

दिनग मगळ गाव माथ हावा फूग्यो । साहूवार क बटे न नाग दवता ढसण ग्यातर आया पण चौथ माता यीन भसम कर दिया ।

पिडताणा आग्या लवण ग्यातिर वात राकी । चिमठी आख्या र सवार पिडताणी बोली—चाथ माता जिसा साहूवार र बटे माथ तूठी जिसी सगळा माथ तूठीज । चिमठी रा दाना पीपळी माथ नास गिया । सगळी लुगाया विमा ही करियो अर पगा लागी । पिडताणा चूना तूनडी अमर दूवण रा आणीप दा ।

मधु र पिता री यामारां रा तार आया आध मन सू मिलण खातर गइ ।
मधु रा बाप र्मे रा रागी हा । मारा मुहाग सम्बा चाल भी सक हो अर नी
भी ।

मधु रा मा सगळी बात सुण रागी हा । मधु न ममजावता, बटी एक
ही मली माय साठ अर बल न पाणी पावा जा सक । बात फक्त समभट्टारी
की है । थार बाप न दग ।

मा री बात सुण मधु विचार माय पडगा भल आ क बात है ?

मूमल

मार कूट र लिखणू-पणू माय लिया जणा बापू बठ हा चाकरी बरण रो कह्या। तस बीस घरा रो गाव। रल सू दा बीगी वाम दूर। विरग्या दूव जणा पाळर पाणा पीवण सारू मिल नी ता बरा रो बळवळा पाणी। चौमाग माय सेत रा वाम बाकी र दिना मांय ऊट रो जट का भंड रो ऊन रा ढेरिया वाता का चरभर रमी। गाव माय का घ घा नी। साल सुआई रा पढता काळ माम नवण रा फुरसत ही वानी देवता। सती जठ मी मूखी हा। घर रा मरचो डाकण सा मूढो फाडियाडो रवतो। आवण न लूतो-मूग्या घान चाहिज। गाव रा सगळा लाग भूख सू बाथडा बर। बापू रो बात घणी ही घासी ही पण गाव माय नी तो चाकरी अर नी मजूरी। हारन ह् बोल्या-बापू! आपर रिस्त रा भाई अहमदाबाद रव वां र नाम बागद लिखन मन वा र मन खिनाय देव तो म्हारी बठ बठ ही नौकरी लगाय देव। बा र नाम रो बागद लयन चाम दिन बहीर हूयन नागीर आयन आधी रात न गाडी चड्या।

सारी गत आग्या दिन गाडी माय चालता रह या। वळनी लू रो पट कार नानी रो याद दिरावती ही। मोल रा पाणी पीवतो गुड रो चूरमू लूण मिरच रा चटणी र माय खावता दूज दिन सिझ्या पडिया पछ आतूरोड पूग्या जणा जीव माय जीव आया। विरग्या मीकळी हूयोडी ही। जमी हरी बरस ही। बठ सू गाडी घाली जणा ठडा पून रा फटकारा लागवा लाग्या। बड रो घुढी खालन छाती माथ पून रा फटकारा लिया गाडी रा लट्टू चसग्या हा। ठडी पून र लागता ही डेन रा सगळा मुसाफिरा रो जीव सोरा हूयग्या। गाडी र हिलक साग सगळा न उवास्या आवण लागगी ही। टावरिया भावा रो लोळया माय सायग्या हा। म्हारी आरग्या माय नीद रो घपकी लागवा लागगी ही। ह् आग्या न घणू ही फाड फाट न खोलणी चाव हो पण व ता मिचीजता ही जाव ही। हारन ह् घूजीवणग्यो। रेळ गाडी सडखडाट बरता भागती जाव ही।

आज सू अड गड तीन सी बरसा म्हार जिवा ही भीख रा मारियोडो काळ सू दूटपोडो अमरकोट रो राजा आपर बट महेद्र र साग घर स्यू निक

लगा हा। लगा लग पडत काळ मू गाव उजड्या हा। घणराग सामर मर
 ग्या हा। वरमा हाडका रा डाचा ह्यम्या हा। राई मूय न ताल वणया।
 आम्ही साळ चालती बळती पून चामडी न ग्याल वणाय दी हा। जाण जागी
 त्रणम्या हा। हारन राजा तग लुगाया न भळा करन डागरा गामरा साग गाव
 मू टुर पडियो। मारग पूछता जाखी रात चालता तिन माय पडाव गरतो गाव
 र गोरव घूम्या। पाणा मू भरिया लबा लब तळाव दह्या जणा जाह्या
 पाणतो ही रम्यो। गाव र ठाकर वन मदस भिजवापा क अमरकाट रा
 राजा जापरी रयत अर डागरा न लय न काळ रा मारियाडा आया है।
 ठाकर सा बडा ही भला हा। मासग साह अडाव वतायो किरसा न सत
 वताया अर ठाकरा र रवण रा व गवस्त कियो।

गाढा आधी रात न अहमत्यावाद टसण पूगा। मुमाफिरा र हडवडाहट
 अर कूळया र हाक हडवडाईज न उठयो। काका हला पाडतो आया। गाढी
 लय न ड बे मू उत्तरन काक र लार लार चाल पडियो। बापू घणी ही समण
 नारी रो काम किया मन बीर करण र प ली ही काके न सगळ समाचारा रो
 कागण नास तिया हा। नी तो हू ड मो मान्या र छात जिसय स र माय काक
 न कठ दूता। हू चमवरा मो मरक माय खडियो रवता। चमगूगा सा 4 5
 तिन ताहा म र न दखता रह या। सगळा म र रात दिन चालतो रवता।
 कीडी नाळे दाही मिनस आख दिन अर आखी रात आवता जावता रवता।
 कि ह ही मरण रो फुरसत नी हूवती। काक साग स र माय घूम्यो। सडका
 पिछाणी नौकरी खातर पेड्या माय जावणू मरू कियो। काके रो जाण चीण
 माकळा हा ई कारण मान माय ही नौकरी लागगी। दो तीन दिन तो मील
 माय घूमता रयो। आपा आप ही रूई पीणी ज ही मूत कत हो कपडा बणीज
 हा। हू तो देखतो ही रह यो। कपडे रा अता मान ता सपन माय ही कोनी
 दख्या हा। जचभा ह्यो क अत कपडे रो साग काई कर। माया काम
 करणा ही छोड दिया हा। हारन काक न पूछयो काका। अत कपड रा लोग
 काई कर ?

सिडकी दय न काका बोल्यो— बार जाव।

आग म्हारी ता काक मू पूछण रो हिम्मत ही नी हूई। म्हार मन मांय
 घणा ही विचार आवता क आ वात काक न पूछ ? पण मन मारन राखतो।
 रोट्या र खाऊ म्युकुण घणी वात कर। मीन माय नौकरी हूवण र पछ
 काका मन जापर हताळू सेठा रो गिही माय राख दिया। मील मू सीधो सठा
 रो गिही पूग ज्यावता। बठ ही राणू न्याय लवतो अर गिही रा छोटी मोटी

मगळी काम कर दबता म्हारा तिन पाधरा हूयग्या । हिसाब किताब रा जाण कार हूवण मू सठा रा मन भावता हूयग्या । मरा रा बटो म्हार सायनू हा हून ३ जका गद्दी माय ही मूवता । रात न मन ता पडता ही ना आय ज्यावती पण वान वाळी मोडी आवती । माम नवण कारण हू वीरा पक्की भायला हूयग्या । एक दिन वा मन पूछ्या—तन पडता ही नी किया आय ज्याव मन ता आधी रात ताही नी आव ।

हू ई रा काइ पडूत्तर दबता । जात रागण खातर बोल्या भाइ । हू गाव रो आदमा हू । जक कारण पडता ही ना आय ज्याव । पठ एक दिन वो मन मगळी बात बताई क म्हारा एक छारी सूनह हूयग्या है । जकी रो व्याव सूरत माय हूया है ।

मन घणू ही अचम्भा हुवा । याव प ली प्रेम किया हुव । म्हारा व्याव तो हूयाडा हा पण आ सगळी बात माय हू कारा हो । सगाई व्याव हूयाडा दख्या हा पण प्रेम हूयाडा आज ताही सुण्या नी हा । सठा रो छोरो झुल्लाय न वाल्या—तू गाव री बूध है । सर रा खट्या दख्या कानी । पठ वा आपरी सगळी बात बताई क किया धीर भाई र साग तिनमा दखण न गया हा । अचरा हुया पछ वीरा भाई सीट बदल न बठग्यो । एक मोन माथ चुम हुमन हू जार स्यू थाप मारा । वा वाली 'आ क करा हो ।' जणा मन ठा पडियो क आ म्हारा नायला नी हूय न वीरी धन है । वा वी स्यू आगती सीट माथ बठयो है ।

हू वाल्या—तू अठ कणा आयगी ?

बोळी ताळ हूयगी वा पडूत्तर दिया जाग वाली—

तन ठा नी हो क'

अर ! मन ठा हूवता ता हू थापा किया मारना

आ आ बात है

सगळी बात हसी मांय उडगी । जक दिन पछ म्हारो जावणू जावणू वडता गया । म्हारी हयाळी माय वीरी जाव सू हूयोडा धाव नासूर वणतो चाव । बार बार मिसण भोटण सू वा धाव नासूर वणग्यो । हू भट हाथ दगन बायो— कठ तू तो झूठा ही बलाण कर

भायला हस न बोल्या— तू वावळो ही है । हयाळी माय धाव थोडा हुव । ओ धाव ता दिल माय है । इ कारण ही हू चुप रेवू हू । रात न वीरा ही सपना आव । अब किया पार पडसी ?

आ कर्मन वा गल्लगळा हूयग्या । जणा म्हार मन माथ करात चालवा लागी । म्हारो याव हुयाडो हे । पण मन हात ताई आ मालम कोनी क मोटयार लुगाड रा नातो क हे । प्रेम नाव रा नी तो पोघो ळ्या अर नी सुण्या । पण बी र हूवण आळी रात न वा रोय न म्हारी छाती माय मू डा घालियो जर बोली—म्हारा मन किया लागमी । हू पुचकार न चुप हूयग्या । जणा हू घर स्मू वीणा हुया कवळ वन खडी खडा वा म्हारा सुगन मनावती ही । हू धीर कानी देख्यो तो बारी आश्या कनला आडणू गीळो हो । ज सगळा चितराम म्हारा आल्या र साम आयग्या । म्हारो हिवडो भी जोर जोर सू रोवा लागग्यो हो । हारन हू भायल न झरभो वोल्यो 'भाया । काई ई न ही प्रेम केव हे ।

हा वा बोल्यो । जकी रात पछ म्हारा दिन घू धाकर, जावा लागग्या अर रात काळी काळो डरावनी सो लागगा लागगी ।

राजाजी रा कुवर महेंद्र वडा ही बाको छलो हो । दिन सारा निवळता ही महेंद्र रो डीळ पागरवा लागग्या । मूछा माथ ताव देय न जणा बो साड माथ बठ न निवळतो, लुगाया धुयकारो नावती । वृडा बडरा जुग जुग जीवण री आसीस देवता ।

चौमासो निसर ग्या । दसरावो आयग्या । दसराव र दिन गट र सामे वाखळ माय गाव रा ठाकर सा आपर मौजीज सरदार साग बठया हे । राजाजी आपर कुवर महेंद्र साग बठा हा । असवाडे पसवाडे गाव रा लोग अर लुगाया खडी ही । सेना रा मिनख पट्टा रा तेल दिग्याया । घुड सवारी रा करतन दिताय कुवर महेंद्र न करतव दितावण रो नूतो ळिया । कुवर महेंद्र वृटा बडरा न नमस्कार करन वाखळ माय आयो । वाखळ न नमस्कार करन पलक भपकता ही तीर मू सही निमाण लगायो । तलवार र करतव माय चोखा चोखा री मूछा साफ करती । आपरी काळी साड माथ बठ न दौड लगाइ ता सातरा घोडा न लार छाड दिया । ठाकर सा धूयकारा नारयो । रावळ री लुगाया चावळ यौछावर किया । मूमल र गावा माथ सुर्वी आयगी कसणा टूटवा लागग्या । टूक्या फाटग मू मूडो सास र साग कुण सा गर हूयगा लागगी । मन हाय मू निसरग्यो ।

हू साचना लागग्या म्हारी धण र वार माय । कागद हू किया देऊ । वा पणू जाण ही कानी । काळी हिरणी सो गोळ आल्या आसवा मू भिग्योडी म्हारी छाता माथ सो सो ऐरण मारवा सो लागगी । आखी रात जाख्या फाडतो रवतो । कणा ही वा आवती दीखती कणा ही जावती शीखता । मुळरती

आवता अर उदास हय न जावता दावता । कणा हा हू बीन लवण गातर हाथ पमारता । गाली हाथ पून माय झूलतो रवता । हू चित्राम दृमाडो देवतो रवता ।

जाग्री रात सठा रा छारा पमवाडा परतो रवतो । तडकता रवता विरूडू र डक लाग्योडो सा । हारत हू उठन कबला—भायता आज इहा किया ? 'अर । आज काई काई वात हूई ?

'आज जणा वा आपर हाठा रो मीठा शिया बो वतावता—पछ म्हार सगळ डील माय ऐक जठण हूयगी । म्हारा मन म्हार हाथ सू निसरग्या । म्हारा हाठ सूया रव । बार बार पाणा पीवणै सू भी जीभ ताळून छोप माती सा दाता सू टकराव । हाथ माय तणाव हुव । सगळ डील रो नाडया दूतती सी लाप । ज र गा र मरण सू प ली राहिणो र अधरां रो चूम्या लवणू चाक हू ।

जीभ ताळून चिपकगा । हाठ गूलग्या । हाया रा मुठया भीचाजगी । जाह्या मिचीजगी । बी रो जा हातत देवन हू डरग्या । बीन ऋभडिया ।

ओ क कर वा थात्यो—मन कल्पना माय बीरो सुग नी लवण दव । माच ही घडी एक वा शणी भात उद्वेग माम रहयो । आधी रात गुजरगी जणा बो सावळ चत हुयो, पाणी पाव १ पसवाडो फेरन सोयग्या । हू सगळो रात घडी रो टिक टिक सुणतो रहयो अर घडी रो मुदया दवता रहयो । रात रा हर पळ मन झक झरात रहया अर जावती बळा म्हार माथ रहम रा दो आसू रा टापा नागता जावतो ओ रहम जक सू हू घण रो छाती माय मूडा लकोय लवणू चाव हू, पण ।

पौर एक रात गुजरगी ही । माळिय माय दियो चस हा । मूमल डोलिय माय सूती सूती पसवाडा फेर ही । काचली रा कसणा खुलन छिटकग्या हा । वा बार बार आपरी छाती माथ हाथ फेर ही जिया गम्योडी चीज न लाज ही । चीज ना मिठण सू मूमल मचळती जाव ही । खुल गोखे वानी देख ही । उवरा र सडक सू चाक ही । ठड क्षीणी भीणी पडवा लागगी पण पीर लिलाड माथ पसीत रो बूडा चमक ही । गासू सू हाथ र सार स्यू महेन्द्र माळिय माय उतरिया । बीन दखता ही मूमल सुप बुध ताय थठी अर हाथ बडाय न बाथा माम लवण खातर आग चाली । आह्या माय मदहोसी ही पगा माय फुर्ती ही । देख हू वार वि या किया ' दूटक मबद सू ड सू थार आया ।

आ कयन बा गल्लगळा हूयग्या । जणा म्हार मन माथ करात चालवा लाग्या । म्हारो व्याव हुयाडो है । पण मन हाल तार् आ मालम कोनी क मोटयार लुगाइ रो नातो क है । प्रेम नाव रो नी तो पौघा दक्यो अर ना सुण्यो । पण बी र हुवण आळी रात न वा रोय न म्हारी छाती माथ मू डा पाळियो अर बोली—म्हारा मन किया लागसी । हू पुचकार न चुप हूयग्या । जणा हू घर स्पू बीदा हूयो कवळ कन सडी सडी बा म्हारा सुगन मनावती ही । हू बीर कानी देख्या तो बीरा जाख्या वनला आढणू गोळो हो । ज मगळा चितराम म्हारा आग्या र साम आयग्या । म्हारो हिवडा भी जोर जोर सू रोवा लाग्यो हो । हारत हू भायल न झरभोड बोत्यो 'भाया । पाई ई न ही प्रेम केव है ।

हा वा बोत्यो । जकी रात पछ म्हारा तिन धू धाकर जावा लागग्या अर रात काळी काळी डरावनी मी लाग्या लागगी ।

राजाजी रा कुवर महेद्र बडा ही बाको छला हो । दिन सारा निकळता ही महद्र रो डीळ पागरवा लागग्यो । मूछा माथ ताव देय न जणा बो साड माथ वठ न निकळतो, लुगाया थुयकारो नाखती । बूढा बडरा जुग जुग जीवण री आसीस देवता ।

चौमासो निसर ग्या । दसरावो आयग्या । दमराव र तिन गण र मामै वाखळ माथ गाव रा ठाकर मा जापर मौजीज सरदार साग बठया है । राजाजी आपर कुवर महेद्र साग बठा हा । असवाड पसवाडे गाव रा लोग अर जुगाया खडी ही । सेना रा मिनग्य पट्टा रा खेल दिखाया । घुड सवारी रा करतम दिखाय कुवर महेद्र न करतव दिसावण रो नूतो दियो । कुवर महद्र बूटा बडरा न नमस्कार करन घासळ माथ आयो । घालळ न नमस्कार करन पलक भपकता ही तीर सू सही निसाण लगायो । तलवार र करतव माथ चोखा चोखा री मूछा साफ करदी । आपरी काळी साड माथ बठ न दोड लगाई तो सातरा घोडा न लार छोड दिया । ठाकर सा धूयकारा नाटयो । रावळ री लुगाया चावळ योछावर किया । मूमल र गाला माथ सुर्धी आयगी कसणा टूटवा लागग्या । दूक्या पाग्य मू सू सूनी साम र साग कुए सी गरी हूयग्या लागगी । मन हाथ सू निसरग्यो ।

हू साचवा लागग्या म्हारी धण र धार माथ । कागद हू किया देऊ । बा पढणू जाण ही कोनी । काळी हिरणी सी गोळ आख्या जासवा सू भिग्योडी म्हारी छाती माथ सी सी ऐरण मारवा सी लागगी । आखी रात जाट्या फाडता रवता । कणा ही वा आवता दोखती कणा ही जावती दासती । मुळकती

आवती अर उदास हय न जावता दीखती । कणा ही हू बीन लवण खातर हाथ पमारता । चाली हाथ पून माय थलतो रवतो । हू चिनाम हुयोडा देसतो रवता ।

आधी रात सठा रा छारा पसवाडा फरता रवतो । तडपता रवता जिच्छू र डक लाग्योडो सो । हारन हू उठन कवता—भायता आज ईहा किया ? 'अर । आन काई काइ घात हुई ?

आज जणा वा आपर हाठा रो माठा दिया बो वतावतो—पछ म्हार सगळ डीन माय ऐक जळण हुयगी । म्हारो मन म्हार हाथ सू निसरग्यो । म्हारा होठ सूखा रेव । बार बार पाणा पीवण सू भी जीभ ताळू न छोड मोती सा दाता सू टकराव । हाथ माय तणाव हुव । सगळ डील रो नाडया टूटती सी लाग । ज र खा'र मरण सू प ली रोहिणी र अधभा रो चूम्यो लवणू चाक हू ।

जीभ ताळू स चिपकगी । हाठ सूख्यो । हाथा रो मुठया भीचीजगी । आख्या मिचाजगी । बी रो आ हालत देखन हू डरग्यो । बीन भभेडियो ।

ओ क कर बो बोल्पो—मन कल्पना माय बीरो सुख नी लवण देव । साच हो घडी एक बो इणी भात उद्वेग माय रहयो । आधी रात गुजरगी जणा बो सावळ चत हुयो, पाणी पीव न पसवाडा फरन सोयग्यो । हू सगळी रात घडी रो टिक् टिक् सुणतो रहया अर घडी रो मुड्या दग्वता रहयो । रात रा हर पळ मनै क्षक बरात रहया अर जावती वळा म्हार माथ रहम रा दा आमू रा नपा नागता जावतो आ रहम जक मू हू घण रो छाती माय मूडो लकोय लवणू चाव हू, पण ।

पौर एक रात गुजरगी हा । माळिय माय दिया चस हा । मूमल डालिय माय सूती सूती पसवाडा फेर ही । नावली रा वसणा खुलन छिटकग्या हा । दा बार बार आपरो छाती माथ हाथ फेर ही जिया गम्योडी चीज न खाज ही । चीज नी मिलण सू मूमल मचळती जाव ही । खुल गोले कानी दस ही । उदरा र खडक सू चीक ही । ठड झीणी भीणी पडवा लागगी पण बीर लिलाड माथ पतीन रा बूदा चमक हा । गाण सू हाथ र सार स्यू महद्र माळिय माय उतरिया । बीन देखता ही मूमल सुध बुध साय बठी अर हाय बग्याय न बोया माय लवण खातर आग चाली । आख्या माय मदहासी ही पगा माय फुर्ती ही । नेत्र हू थार बि या किया टूटक सबद् मूड सू चार आमा ।

आ कयन वा गल्लगळा हृयग्या । जणा म्हार मन माथ करात चालवा लागी । म्हारो 'याव हुयोडो है । पण मन हाल ताई आ मालम कोनी व माग्यार जुगाइ रा नातो व है । प्रम नाव रा नी तो पौघा देख्यो अर ना मुण्यो । पण वी'र हृवण आळी रात न वा रोय न म्हारी छाती माथ मूंडा घाल्लियो अर बोली—म्हारा मन किया लागसी ! हू पुचकार न चुप हृयग्यो । जणा हू घर स्यू वीदा हृयो ववळ वन खडी खडा वा म्हारा सुगन मनावती ही । हू बीर कानी देख्यो तो धीरी आख्या वनला आडणू गीळा हा । अ सगळा चितराम म्हारी आख्या र साम आयग्या । म्हारो हिवडा भी जोर जोर सू रोवा लाग्यो हो । हारन हू भायल न सक्भाड बो'या 'भाया । काई ई न ही प्रेम वव है ।

हा बो बोन्धो । जकी रात पछ म्हारा दिन धू घाकर, जावा लागग्या अर रात काळी काळी डरावनी सी लागता लागगी ।

राजाजी रा कवर महेंद्र बडो ही बाकी छला हो । दिन सारा निक्ळता ही महेंद्र रो डीळ पागरवा लागग्या । मूछा माथ ताव देव न जणा बो साड माथ वठ न निक्ळता लुगाया शुधकारो नावती । वूडा बडरा जुग जुग जीवण री श्वासीस देवता ।

चौमासो निसर ग्यो । दमराधो आयग्या । दमराव र दिन गट र सामी वाखळ माथ गाव रा ठाकर सा आपर मौजीज सरदार साग बठया है । राजाजी आपर कुवर महेंद्र साग बठा हा । जसवाडे पसवाडे गाव रा लोग अर लुगाया खडी ही । सेना रा मिनग पट्टा रा खल दिग्याया । घुड सवारी रा करतव दिग्याय कुवर महेंद्र न करतव दिग्यावण रो नूतो दिया । कुवर महेंद्र वूडा बडरा न नमस्कार करन वाखळ माथ आयो । वाखळ न नमस्कार करन पलक भपकता ही तोर सू सही निसाण लगायो । तलवार र करतव माथ चोखा चोखा री मूछा साफ करदी । आपगी काळी साड माथ वठ न दाड लगई तो सातरा घोडा न लार छाड दिया । ठाकर सा धूधकारा नाख्या । रावळ री लुगाया चावळ याद्यावर किया । मूमल र गाला माथ सुर्वी आयगा कसणा दूववा लागग्या । दूक्या फाटग मू मूंडी सास र साग कुण सी गरा हृयवा लागगी । मन हाथ सू निसरग्यो ।

हू सोचवा लागग्या म्हारी धण र बार माथ । वागल हू किया दळ । वा पडणू जाण ही कोनी । काळी हिरणी सी गोळ आख्या आमवा सू भिग्योडी म्हारी छाती माथ सी सी ऐरण मारवा सी लागगी । आखी रात जाग्या फाडतो रवतो । कणा ही वा आवती दीखती कणा ही जावती दीलती । मुळकती

मरमावती मूमल बोली—'या ही काकी'

आज ताही तो मन इण भात ना मालम पड हो' पडूसर देवती वात टाळती नायण नीचो मुडो करन मुळकवा आगयी। नरा माय नाई अर परा माय काग स्वाणप रो सेवरो लिषा फिर। नायण देवती लुगाई री घाल पिछाण पेट री वात हाठा माथ ल्याव देव बीस्यू वचणू घणू दोरो हुव। नायण मुळकती ज्यावती अर मगळ डीळ माथ पीठी करती ज्यावती। ममवरी करती ज्यावती क कवराणी जी जे सरून वया रा। कवराणी जी रा मूडो धोडो पडवा लाग्या। नायण मगळी वात समभयी अर होळ सी बोती—
कोइ जूठा वारियो (घाघडा) मत खाई ज्या। जात रो घणी ही देवज्यो हाल की कानी हुयो है। वात त्रिगट बी स्पू प ली पग पाछा घर लीज्यो। ममभावण र माग ही मूमल सगळी वात वताय ली। नाम पतो भी वताय दियो। म्हारा चेम साचा निक्ळगो। राजा जी न मगळी टा है। समभावती वाली—घवराज्यो मत ना।

अमरकाट माय मागीडी बिरला रो समाचार मिह्या। राजा जी आपरी सगळी रयत न लय न पाट्या अमरकोट आयग्या। महद्र रात पडिया पछ अमरकाट मू टुरतो अर पीर एक रात गया पछ मूमल वन आय ज्यावतो। आखी रात मूमल वन रवता अर तडक पाळा टुर पडतो। महद्र रो रोजीन रो आवणू जावणू रवतो। राजा जी न ँण वात री ठा पडी जणा वे साड र तळा माथ डाम लगवाय टिया। महद्र दूजी सा लय न पूगणू चायो पण पूग नी सक्या। ँण उधडवुण माय 5 6 तिन निकलग्या। हारन वो सागण सा न नारू पाय न चाल्या।


मूमल रा जे तिन मात मा गुजरया। नारन वा आपरी छोटी वे ण मूमल सू बोती—तू किया हा मन महद्र सू मिलावण रा जतन कर नी ता हू पागल हूय ज्यासू। महद्र न किया ही मदेसो पुगाय क हू बी वि या जीव नी सकू। मूमल चतराइ मू काम करियो। मरदानू भेस धारण करन पीर एक रात गया पछ मूमल वन आई। मूमल भायन गळ मिला। गळ मिलता ही मूमल न ठा पाडिया क जी डी माटयार रा ना है। भट छेड हई। मूमल हस न चूमवो लिया अर दोलिय कानी चानती बोली—हू महद्र तो नी बुलाय सकू पण भरम रावण खातर महद्र वण न मोटचार रा माग ता रच नी सकू।

रीमा वळता मूमल मूमन न लय सोयगी। दोयू हस पडी। थोडी ताळ घुम घुम चालती रो। रात ँळवा लागगी। दाया न नीद आयगी।

जाग भाय न महेंद्र भूमन न जाल ली। चाथा माय लय न आंख्या रा
थोठा रा गाला रो प्यारियो लियो। भूमल सुध बुध खोवन बाया माय झूलणी।
महेंद्र भूमल न उठाप न डालिय माय सुभाई। पीर एक रात री जठ ताही
भूमन साम रमतो रहणो।

महेंद्र पीर एक रात गया पछ आवता अर तडक पाछो च गया जावतो।

पगार मिलण र दूज दिन रचो राल न बाकी रो धन गाव मनीआडर
गू भेज देवतो। छुट्टी छपाटी र दिन काको मिनण खातर आवतो। नह सू
मिलतो। मिटी बाग हरतो। चोखी सीत देवता। मे रा खाको बतावता।
कपाळ सगळा न चोखो लाग। भणिया मिनस माय रवण खातर हू थाणी
घोडी अंग्रेजी पदवा लागयो। सगळा माय छाप ही हू तार बाव लऊ।
रोत्रीन रो छापो देखण कारण म्हारी जाणकारी बढती जाव ही। म्हारी घर
घराणी री याद रो धाव तो रात दिन नासूर सा बढतो जाव हा। मन घणू
पछाडा मारतो मिलण खातर सामे सियाळा हा चढती जुआनी ही पण मन
भरा मारन ध्यावस धार लवतो।

 रोहिणी मासर जाय न पाछी आययो हो। भायलो दोफारा मिलण
पातर जावतो। नाटक सिनमा माय लय जावतो। रोहिणी तो सगळी विद्या
पढा आई ही ऋण वास्त भायन रो पूरा ही हाव खुल्ल्या हा। 20 25 टिना
पछ रोहिणी पाछी मासर आवण री त्यारी करवा लागगी। भायलो बाग
घणा ही फाव्या पाई पण वा बोली मोट्यार दीय लुगाई राय सक आ हू नाय
माट्यार कोनी राय सकू क। हू मोट्यार अर यार दा या न राजी राय
सकू हू। तू म्हारा यार है वो धरम रो पति। म्हारा धरम दो या
र बफालरी रो ह। थ दोयू म्हार डील रा घणी हो। म्हारी सुत्रता
या नोया र साग रसी। भायलो घणा ही ताफला ताडया पण रोहिणी पाछो
वेगा ही मिलण रो नाव लयन सासर चला गी। भायला च्यार छ दिन चित
ध्रम भटक्योडो डालतो रहणो। पछ एक दिन धोळ दाफारा सावरमती माय
जाय न डूव मरिया। गठ पठाड पायन रयग्या। हू खाट सिक्क सो सगळा
खेल देखता रहणो। हू मू डा पाण पाड न घण ही जोर स्पू रोयो पण भायला
पाछो नी आयो।

गयोडो आज ताहो पाछा नी आयो वा पर विया पाछा आवता।

भूमल र पगा माथ उबटन लगावती नायण बात्री— कवराणी जी !
आपरा डील डोळो डोळो सा विया लीय।

‘सिर भारी है हूँ कय पिण्डो छुटायो । पाणी पी ी सोयग्यो ।

निनूग रोहिणी पाछी मूरत बावडगी ।

मूमल रो घाव नासूर हूयग्यो । रात न वा ज र खायन मरगी । बी री चिता माय अती जार स्यू लपटा उठी क अमरकोट माय बठो महेंद्र जळवा लागग्यो । महेंद्र रो भरम टूटग्यो क कोरा नाटक हो । मूमल महेंद्र र भेस माय मूमल र साग सूती ही । आप री भूल मू महेंद्र जळवा लागग्यो । बी आग स्यू खुद ही जळग्यो ।

म्हारी मुमाफिरी बोळा निनारी हूयगी ही । बापू रो कागद छुट्टी लयन घर आवण खातर लिख्यो । देस माय विरता मोकळी रा समाचार भी हा । हू छुट्टी लय न घर आयो । रात न भेडी माय धण वन मोय न सगळी बात वताई जणा वा म्हार घणी चिप ी हसने बोली हू ता प ली मू ही बी आग स्यू जळू हू । पळ म ी महेंद्र जळतो दीख्यो, रोहिणी जळती दाखी, वा सगळा साग म्हारी घण जळता दीखी रात जळती गीखी अर हू जळती दीख्या ।

अ घरो डागळ माथ पमरता जाव हो ।

महेन्द्र बड़ी मुस्कल मू पूथो । भूमल न पराय मिग वन मूतो तेल मोचडी खोल न पाछो टुरग्यो ।

दिनग जणा दोयू जणी मोचडी देखी तो रात रनाटक रो बडो ही पछतावो हुयो । भूमल मोचडी उठाय न छाती मूलगाई । आस्था मू चीमरा चालवा लागग्या । मोचडी माय बी नर री ग घ ही जका लारल कई दिना स साग सोव । जब रो अस्तित्व बीर साग एक हूय ज्याव । दाय मिनग्या री जाग एव ही है जकी मिटण सारू तडफ अर मितता ही वा जलन वचन जिया चमन उठ ।

ठाकर नायण र मूड मू चाउ चाली क महेन्द्र भग्या है । महेन्द्र रा मोत रो हाको गाव माय फरग्यो । भूमन ग वान आ मुणता ही फाटग्या अर हिवडो टूटग्यो ।

सठा र छारे र मरिया पठ म्हारा साचित ही भटकग्यो । मन पडी साजण सारू आवती दीखवा लागगी । रात्यू बीरा ही सपना आवता । रोहिणी धीरी मोत रा ममाचार सुण न 15 20 दिना जाडा घाल न अम्मदावाद आई । हू मिनण सारू गयो । सगळी बात बताई । रोहिणी घणी दुखी हुई । वा दो या न राखणू चाव ही पण राग नी राक ही । बात आई गई हूयगी । रोहिणी मन बार बार मिलण रो कहघो । हू मिनण ग्यातर नी गया । बी र गावण र प ले तिन हू मिलण खातर गयो । बाळी बाता हुई । हू धोत्या— म्हार दोस्त रो नातो निभावण पानर हू बार ची मायहाथ फरणू चाठ हू ।

बोली तरह हाथ फरणू बार अर बी माय म्हार मन माय की फरक कोना वा हसन बोली । हू जणा धीर डील माथ हाथ फेरवा लाग्यो जणा मन मालम पत्रियो क धीर डील माथ बडवानल सी एक तातेड निवळ । म्हारो माथ ज्यू ज्यू नीच आव हो वा सपट बन्तो जाव ही अर जणा म्हारो हाथ सूडा वन पूथी जणा म्हारो हाथ जाण एक हजार बिच्छू एक माग ही म्हार हाथ माथ डरू लगाया है जिया जळवा लागग्यो । म्हारो हाथ आपो आप ही फरग्या अर हू हाथ पकडन बठ बठग्यो । हू वाल्यो—हू अठ ही जळ मरस्यू । म्हारो दास्त मन लीखवा लागग्यो । म्हारा प्राथ पत्र न घर र बार त्याय न सबक माथ लडिया कर लीना ।

रात पडगा जणा हू गिदी पूथो । नीकर सोवण री तयारी कर हा । मन लवळ वारळ तैखन बोया—यायू ईहा किया ?

‘सिर भारी है ह कय पिण्डो छुटायो । पाणी पो ी सोयग्यो ।

दिनूग रोहिणी पाछी भूरत बावडगी ।

सूमल रो घाव नासूर हूयग्या । रात न वा ज र लायन मरगी । बी री चिता माय अती जार स्यू लपटा उठी क अमरकोट माय बठो महेद्र जळवा लागग्या । महेद्र रो भरम टूटग्यो क बोरी नाटक हा । सूमल महेद्र र भेस माय सूमल र साग सूती ही । आप री भूल मू महेद्र जळवा लागग्यो । बी आग स्यू खुद ही जळग्यो ।

म्हारी मुमाफिरी बोळा िनारी हूयगी ही । बापू रो कागद छुट्टी लयन घर आवण खातर लिश्या । देस माय विरला भोवळी रा समाचार भी हा । हू छुट्टी लय न घर आयो । रात न मही माय घण कन मोय न सगळी वात बतार्ई ाणा वा म्हार घणी चिप ी हसन बोनी हू ता प ली मू ही बी आग स्यू जळू हू । षठ मी महे द्र जळता दीस्यो राहिणी जळती दीखी, वा सगळा साग म्हारी घण जळती दीखा रात जळती दीखी अर हू जळती दीस्यो ।

अ घग डागळ माथ पमरतो जाव २ ।

बोलता-चितराम

म्हारी बात की के केऊ पली सगळी बात कवणी पडसी अक सू आपन ओ मालम पड ज्याव क मा बाप रा नातो रिस्तो एव भटक र साग इया दूट ज्याव जिया जनम जात वर हूव । जने छिया दाई रात दिन म्हार आग लार घूमतो रवता वो ही परमात्मा दाई दूर हुवतो गया । हू पछाड म्वायन रोय पडी । खिलखिताय न हस पडी म्हार दुख माथ जा जाणन क ममार रा जो ही नातो हे रिस्तो हे ।

म्हारा काका जको म्हार सू घण हतरामता अर मन आपरी वडी वटी मानतो हा । जको माका पडता हा आपरो काळी छारी न भणियो डावट र लार करती अर म्हारा ब्याव चपरसी र वेटे साग कराय नियो । म्हारा बाप भरी जुवानी माय भाग पीवता पीवतो मरग्या जर मा ठीकरा घसती घसती ही वूटा हुयगी । जणारूप घिस्योटा वरतना माथ अवार ही हुयोडी कळइ घणी निलरवा लागग्या । म्हारो कानो अर काकी गो यू जणा म्हा सू आटा टेडा रवा लागग्या । म्हारा चमवतो मू डो वीरी लाडसर मू चावा लागता । वो लारल जनमरोवर निवाळणताई रात तिन वाग्यान्वतो जर जणा म्हारा हाथ पिळा कराय दिया जणा वीन चन पनिया । म्हारी भाळी मा वीरी ही बात माय जायगी अर रात तिन वीरे साग ही सगळी बात करती । म्हारी मा न म्हार बाप र मरण रा अत्तो दुख कोनी हुयो हमी जत्तो म्हार जनम रो । ज म्हार 'पोळा हाथ करण र भार सू दुखी रवती अर म्हारो काका र्हरा ताभ उठावण रो चि ता माय लाग्याडो रवतो । अर एक तिन—

आया सगारा रा सूवटा

रग्यो टोळी माय सू टाळ

गीत री कडी र साग साग मन आडाड र लार करती ।

तरपण माय जणा हू म्हारो मूडा देवती मन रिया मानम पन्ता के तरपण म्हा सू प्यार करणन आग आव अर वा जिया जिया जाग आवता ता एन साग ही एक भटक र साथ वी माय सौ सौ दराड पड ज्यावती । काक रा वाळा छिया लार भाकता दीवती । मा छानारा भार उतारन भरता नीवता

अउ सासरो ही एक आसरो हो पण सासर री उठा फटक माय की पतो कोनी चालतो क कणा काई हुमी ।

वगत भागता जावतो हा । पेट भरिया पछ दब्योडी भावना बघवा लागमी । आभो टोकसी सा दीखवा नाग्या । चवरा रा घूवो लाग्या पछ रूप निखरवा लाग्यो हा । पाम पडास रा मूडा वाकवा लाग्या हा । गळी गुवाड री लुगाया मुडो दख न धूधकारो नावती । निखरतो रूप पर मसा मू आधा हूवा लाग्यो । कामनावा ईसा मू जळवा लागमी ही आ ईच्छा हूयवा लागमी क इन पसीन दाई उतार फकू । ओ म्हार लायक कोनी । ईन ता नाळी रा पाणी चाहिज जर हू तो माशानी मौसम हू ।

राजरो पि डा छुडायन हू मोटघार न नयन पारी हुयगी । दूमरे वास माय मठ घरमच द री हवेली र पिठाड माय रवण लागगा । सेठा र कपडे री दूकान ही । मोटघार लुगाई प्रेम मू रवता हा पल्लो छारो हा दूजी आस न घ्याडी ही । म्हारी सठाणी र बगती हुयगी । म्हारा दिन बावळ्या हा । रोती मू अर कपडे लत्ते मू । सठाणी रा छाटा मोटा काम कर दवती अर हताई करन तिन गुजार दवती म्हारा दिन मोरा हुयग्या आन भी खादी वर्णे मू नारो छुडाय तिया हो घर आला तिनग मिश्या सठा र उगराई रो काम कर देवता जक मू घर र मरच माय सारा नागतो हा ।

जणा सठ घर माय रवता हू कदई सठा र घर कानी कोनी जावती ही सुमर मो कायदो राखती । एक तिन हू मिश्या राती वणावण रा त्यारी करहा अत्त न पाळ री कुडा खच खडइजी हू भाग क कु टो खोलिया । वा रा मु डो नेखन म्हारा प्राण मुखवा नाग्या । पूछ्या ईहा क्यू ? वे होळ होळ पग राखता आय चान पडिया । हू चितराम सी बारी पकडिया खडी री होस बावडिया जणा नारी तिन लार चाल पडी । फर पूछ्या— इ हा उदास किया ?

मन मसपेड कर तियो

आ ममप च क हुष हू उतावळी सू वाली

तू समझे न ममभाव

खुलामा कर न वताआ

नौकरी मू हटावण गे रास्तो है

म्हारा पग बठ ही चिपक्या घम्म मू बठगी । बोली जव काम किया चालमी ।

रोदा काम थोटा ही चान मी । जायाची आफत न पत्नी ही पत्नी ।
आ हुयो किया

तन बतयाही हो नी आज मू 4 5 दिन पनी छात्र माहुर आपर घर भेजिया बठ मम मात्र बरतन मात्रणा रो किया। हु मना कर नियो जणा मम साहब नाराज हुयने माहुर सू टेलीफूब स बात करी अर मन ममपड करण रा कहियो हु पाछा आयो जणा आफिम आळा पुमर पुसर करता हा म्हारा हताळू मन बतयो क म्हार माथ आपत आवण आळी क जणा सगळी बात म्हार समझ माय आई। हु वाल्यो—'नीकरी राज रो करा हा राड रो काभी लव नस्या पाया न।

म्हारो नाम रूपच न है। हु विमला रो काका हु। म्हारो भाड मना मू ही भागडी हो। भाग र साग मोठ घतूर रा बीज अर मलियो मित्रायन पीवता। भाग पीवता पीवता ही चन बस्या अर लार छाडयो जुवान डावडी अर पुगाई। धाव माय घोवा करयो। कऊ ता जिन। भाई मरग्यो भाभी बिखरयो। छोरी रा हाथ पीळा करणा ही पडमी। सा चार जग्या बात करी। छारा र दैवण रो बात चानी। भाभी बतयो क पीठ माथ घाळा दाग है। सगळी बात ममझी अर भाभा न बताई। सना मून करन चपरासी र छोर माग याव रा बात पक्की बी। भाभी आप रो राकड मभलाई बीर मागे म्हारो रुक्मिणि मिनन छोरी रा हाथ पीळा कर नियो।

हु मन म मोच्यो विमला गरीब रो घर बसासी। अर म्हारो गहसान मानमी। हु घणू ही न बात म पढणू कोनी चावे हा पण भाभी रा आमू मन ड काम माय फसाय ही दियो। बास गुवाड रा लाग भा मन ही बवता हा क कोई छोरी कुवारी राक्षीज। जत्ता मुडा घत्ती बात। नूई बात मी दिन पुराणी बात सी दिन। होळ हाळ सगळी बात ठंडी पड ज्यासी। जणा हु ओ सगळा काम सळाय दियो।

विमला आपर सामू सुमर मू लइन चारी इयगी। सगळे निना हु वा लागी। तग ओछी बात करवा लागया। छोरी रा हाथ पीळा करिया पछे भाभी निश्चित हुयन सास छोड दी। वा मन अर म्हारो ओला न ले डूबी। तार जत्तो खरचा कियो बीर भार मू हु मरिया पछ की उबरस्यु। म्हारो किया ही म्हार साग चालमी अर बीकी कियोडो बीक साग चालग्यो। बीरी छोरी जणा पग वार राख दिया है व अब पात्य माय कोनी पड। म्हार घोळा माय घूड नाखनी।

मिइया हु सठाणी जी बन जाय न सगळी बात बताई। वे घीरज बघायो अर सेठा सू बात करण रो वही। 2 4 दिन मुक्कल मू निसरथा सेठा र धिन्नडिया हुयो। बाळा दिन काम काज माय ही निसरथा। एक दिन

काम सारू बठक माथ सू चौक कानी जाव ही जणा म्हारी पीठ माथ हाथ पडिया । म्हार डील माथ फूस गन सा चमको लाग्यो । लार पर्या तो सठ पडिया मुसकराव हा । हू सरम नू घरवा लागगी । निजर मिली । उडत मन नू घर रो काम वाज निवटायो । मन री दब्योडी वच्छावा मडरावा लागगी । वे बाभडाभूत ह्यन च्यारू मर घूमवा लागगी ।

घर आयन मोयगी । घर आळा हाल ताई जाया कोना हा । आत्रवल माडा ही आवता हा मन बडा ही दुखी हा । हू मगळा न छोडव भागन जावणू चावती ही । दूज छिण आ ईच्छा ह्यवा लागगी के सगळी बात दान दताय देऊ । काक न गाळया काढव लागगी । सगळी बात फेर नूव रूप माय सोचया लागगी । राटघा र वार माय जावण र वार माय । जावण रोटघा लार है हू भी रोटघा र लार । कण्ठ सूखया लागया पाणी पीया जकी कठा क नीच उतरिया पली ही भाव वण न उडया । हारन पमावडा फरन सावण रो जतन करवा लागया । जणा ही थारया माचती ता मठा रा मुळकता मुडो दीखता । आख्या खोलती तो जाखा ममार अ वर माय डूबतो दीखतो । हू साचती म्हारा काम सेठा नू है अर बारी काम म्हार नू । गाय स्वाथ मित्रन एक नूव स्वाथ न ज म निया ।

दो धारो एक स्वारथ एक जग्या टकराया दा पू जणा जापरो अह्न खायन मिल वठचा । पण ई माय म्हारो अह्न विपरतो ही गया जर अ त माय सडक माथ आयया थोडा लिना पछ सेठ म्हार नू मित्रणू कम कर नियो । वारा ममपेड आत्र आज पाछो हूयग्यो । पण म्हारो पग जका माड वार पडग्यो हा वो पाछा आवण मुसकर हूयग्यो । सठा रा मान तोडण खातर दूसरा माय निजर नाखी । भावतो वटता गया पण म्हार जीवन न नाळी र पाणी सो वणाय दिया ।

खूण री वारी

दिनूग तापारा मिइया जणा ही घोडो टेम मिन वा मन कोनी लाग गळी कानली वारी पान न रेगण लाग जाऊ । वारी गोलता ही जरत रा वद वू मू माथो भणारा लाग जाव । अर मूड रो पीन पिच करतो प ला पडियोड पीक माय जाय पड । पीक माथ पीक पडतो ही जाव अर मोट लेवड सो बणता जाव । पान रा जो पीक एक जग्या पडता पत्तो गरो गून रो नाळा मा ववण लाग जाव । कणा कणा हा घणा चुनो ताम्याड पान रा दुवडो ही पीक र माग जाय पत् । जरद री पीळी पीळी पत्यां माथ वाथ रो ग रो रग हिवड र हार सा जम जाव । तावड माय पान सूक न चूरी बण जाव अर पून र माग उडण लाग जाव । गळी माय आंघत जावत तोगा र माथ पून र पत् वार माग चूरी पागशी टोपी माथ पडता लाग जाव । राहगीर ऊषो देव पण तीव की कोना । पागडी टोपी भडवावता वडवडावता आग चालता रेव । पून पत्कारा मारती ववती रेव । हू सोउतो रटू ओ नाटक क्विस्था है ? वारी टू जणा माळिय माय एक भभवारी मार पान री गुगध रो सुरता री गध रो । भभवारी वत्तो जाव माथो भरणाईज अर हाळ गी व वारी खोन न पिच करता पीक धूक देऊ ।

चीक माय वरतण माजती भाभी रा तरज रा सुर सुणीज । वासी री फूटेडी घाळी सी वा हागो कर— राड कट की । देगर कोनी चाल फोड तियो चाय रो प्याला घर माय एक ही प्याता वचियो थार वाप न सिइया चाय कया माय घालस्यू रीस पमवाडा फेर वा लागगी । आई की पर ही अर उतरवा लागी की और माय । झुझळाहट मू चाल वा लागी— व भी तस्या गोडीला है जका न चाय प्याल माय भाव । टावरा र घर माय अ माती रा ठीकरा चाल ही रोनी । छारी के वोल ? आपर पग री ठीकर मू प्यालो फूट तो ओळमा कम्पनी माथ जाव क घटिया मान निकाळ है थोडी सी व टाकर लागी क प्यालो दाय दूक । जे कोई दूज र पग मू फूट ता रांड दख र कोनी चाल । आग्या फाडती चाल । फूट जासी उणरा भाग ता जका इन ल य जासी । बीरा फूटमी क कानी आ ता भगवान ही जाण पण आ जक र लार आई बीरा सुधरियोडा कोनी तीव । बोठ जाण माथ उपर हाग की मारी है चान जणा

इया मालूम पत्र क रगळ्या चाल है। जग रो आ दस्तूर है क बडा आप सू छोट न सग ही निकमा बताव।

आळ माय राखाडा पोध्या न जणा छडू वा माय मू भभकारा उठ। जरत रा भाग रा। पाध्या रा एक एक पाना जरद री गुग घ सू भरिया हुव। हुव पोधी रो एक एक आखर बोन जरदा जरदा। घडी माय चावी भरणा ता हाथ सगाऊ ता चावी बन मू जरद री मिचली मिचली गध भाव। हैरान हुमन बारी खोलू ता खून आळा पनवाडी बिर परिचित निजर मू म्हार बानी दस। अचाणचूक ही म्हार भूड मू आखर (गम्) कू पड— दाय पान निच नग्बर त्सी सुरती तज चूना घणी सुपारा। पनवाडी माया हिलाय न हा भर। जीवणे हाथ रा दोय आगळी दिव्याय न पक्को कर हूँ जार सू बारी दकू। एक ग रो भभकारा उठ। हूँ खुला सास लवण वास्त माळिय र वारण बन आयन खडियो हुय जाऊ अर लाग्ना लाम्बा साम लवणी सह कर दऊ।

सिझ्या पडता ही भाईजी बकगाप री नौकरी सू घर आसी। हासा घासी पण डाल र रग माय की फरक बोनी पड। तल रो चिक्णास उतरण मू कळो रग और घणा बदरग हुय जाव दूगो सुपा डाल घणी भूडो दीखवा लाग जाव। चाय बणसी। वाटकी माय गिलास चाय सू भरीज नै आमी। भाईजी रा तवर बदळवा लाग जाव। फूल झडसी। चाय सबडका साग पीवी जासी पण चाय रो सुवाद बोना आव। भाईजा सिल्ला लोडी सभाळमी। दूधिया छानसी। बम भाळ रो नाम लय सगळा भाग गटागट चढाय लसी। मूडा गमद्य सू पूछ न हुलो पाडसी अ पाए। ऊपरवाळा भाईजी बन सू आज रो छापा त्याय देखा क सबरा है। डावडी भागती भागती आमी अर होळ हाळ बोलसी वापू छापा मगवाया है घडी एक न पाछो दय जासू।

हूँ जाणु जा छापा आज पाछा आव ना काल। भाईजी तरा माय रसी जणा रात न दम बजी छापा दवण रा नाम लयन आसी अर चाय पी सी बात बात माय हामसी तरी चालमी। घडी दोय घडी हससी अर पछ नीच जाय न साथ ज्यासी। ज कदास नी ऊगमा जणा राडा राडा गाळया काडसी। सगळा न भाडसा। धू-धा मारा कुटा करसी। लुगाई र मा वाप री सात पीडी रा वग्याण हूमी। चूतरी माथ जाय न पड ज्यासी। लाग्योडी माथ तल मालिस हुसी मंदा एकडी बाधी जासी। रात अर दिन जा ही नाटक चालसी। ऊगत मूरज साग आ विस्सा सरू हुसी अर दळती रात ताइ चालसी। अर छापो टसकती भाभी वारमी जगावण माय काम लसी, वा टाबर छिया देखन पाड पाड न राय लसा। आ ही काम वरसा सू म्हार साग चाल। म्हार पछ जब।

हा ई माळिय माय रवमा वार साग आ ही रिम्ता चालसी ।

कणा ही दोफारा चाय पीवण री वायड चानमी जणा चीक वाना दख सू । वान लगायन भाभी रो वाता सुणस्यू । रात र इतिहास न घाद करसू । पूठरा धान रा आभाम हुमी जणा जोर मू हेसो पाडसू 'भाभा' चाय वाना पीवो के ? ज पाछली रात चोखी तरह गुजरी हे ता भाभी भागती आसी । नी ता ठडो पडूतर आसी डाल दूख इ डीळ र दरद र सार एक लाम्बो न्तिहास रेव । जक न हरक मिनन्व कोनी समझ सक । आ दरद डीळ रो कोना हुव मन रा दूव । जका मार भो खावतो रव जर तडफतो ही रेव । इ दरद रा कारण जुगुप्सा मू भरिया है जक न बाही समझ सक ।

जक कद ही हू माडा आऊ माळिय रो वारणा खालू ता माळिय माय सू जेस सडाथ रो भभको उठ भाग रो जरद रो । जी घबराव मिचळी आव । क्याणो कर जणा वा मडाथ जर ग री हुय जाव । नाक फाटवा लाग जाव । माळिय री आरमा राय उठ । हू सोचवा लाग जाऊ क करू जर क नी ? भाभी न देखू । पान रा पीक थूकू । ग री छप्पोडी नूघिया रा असर देख । जरद र वेसास सू माथा चक्कर खावा लाग जाव । हिचकी आव । उल्टी हुवण री नोवत आव । जमडी हुव जणा हू भूल जाऊ के आ भाभी है लुगाई है मिनख है डाकण सा मूडो फाडती दीख जाण मन सगळ न ही खाव लेसी हू बीन मारवा लाग जाऊ हाभा मू पगा सू खूब मार । राडा राडा गाळर्या काडू अर जणा वा मन धको देव— हू सूख चिण सो पट जाऊ । माथा फूट हाथ पग टुट । हिवड माथ चाट लाग । मिनख है कि दाटा । बापडी औरत न डागर जिया मारू । आ सोचता सोचता निटाळ हुयन पड जाऊ । मन म्हारी दाय छिया ऐके साग दीख । हू सोचू आ हू क बो हू ? छिया घूमवा लाग जाव । हू माथा पकड न बठ जाऊ अर कणा ही हू छिया सार भागू—कणा ही छिया म्हार सार भाग । इ भाग दौड माय हू उबास्या लवण लाग जाऊ अर मन पतो ही कानी चाल क मन कणा नाद आय जाव ।

कद कद ही भाईजी र जमती ना जणा व निडाल हुयोडा चूतरी माथ पडिया रव । ना ता व खाणू खाव अर नी पाणी पीव । भाभी बाँरो चमगूग सो मूडो देख न उतास हुय जावती । रीसा बळती बडबडावती सासरा मू तुलना करता पट तो बि या झाली रा कुत्ता ही भर । इ काम माय वारा किरयो एसान ! हार न बा कन आय न पूछती उठो कानी के । सास लेंवता मुरदे सा भाईजी बोलता हू । इ माय भाईजी रा सगळो इतिहास छिप्पोडा है । बी रा एक एक पाना भाभी रा पत्थ्याडा है । भाभी फेर भाग

पीम न गाळी घणाय न देवती । व पाणा मूलवता । घाडी दर पछे भाईजा न
 चेता बावडतो । जल न आधी रात गुजर जावती । भाईजी अर भाभी रा आ
 मीलण माटियाँ मा सग हा चालतो रर । ई मीठ वडव जीवन माय वाचर
 रा बाज हू हा । जक न वर ही लापमा मित्र कर वर वद वासी टुकडा भी
 कानी मिल ।

माळिय माय भभरा उठता भाग रा तरद रा । कणा ही दाया रा
 भभरा एक साग हा उठतो अर बी भभक रा जार अत्ता बघतो क हू रुमाल
 का न नाक डक नेवता । जाम्या फाट फाड न चार मर लूणा लाचरा
 नेयता जाण भाभी री छिया माळिय री नट इट माय रमियोडी है । लुकमीचणी
 भी खेल है । भाभी आवता दिगती जावती दिगती खिलविलायन हसती
 दिगती अर मार गाय न रावती दिवती । कान व रा हुय जावता । मायो
 काम करणा वर वर देवता । हित्याड सामर सो हू निढाल हुय जावता ।
 कण सुणण री बात कोनी रैवती । पीवली मा घठो रवतो । रात सगळी
 आख्या माय निक्ळ जावती ।

पार दिन चढया पछ उठता । भाभी आवतो चाय पावतो । रात री
 सगळी बात वताती । अर कवती के बाळ काई थे ही भाई जी वण गया ? रात
 न घणाई कुचरणी करी ही पण जाग्या ही कोनी । घणी चणाय ली ही क ।
 जणा मन आखी रात रा किस्मा पाछो यान आवतो भाभी री छिया सारी रात
 माळिय माय कोनी घूम हा । हू हैरान हुँवता । म्हार माथ भाभी र माथ लिलाड
 माथ पसीना आवा लाग जावता । मुक्कराता भाभी वन सिरकती अर कवती
 घयरायग्या । कान वन मुडा ल जाय न कवती 'घबराया काम कियाँ
 चालमी । रिस्ता सगळा ही निभावणा पढमा । हूँ चररोबम्ब हुय जावता ।
 रिस्तो एक सामाजिक आवश्यकता है । एक सांस्कृतिक घराहर है । आ सगळा
 सू वरन एक आत्मिक आवश्यकता है । सगळी आवश्यकता मू रिस्ता ऊचो
 है । मन आ दो आवश्यकतावाँ न छाडन रिस्तो निभाणा है ।

माळिय माय एक लीची लीची गध आवण लाग जावती । हूँ नाक माथ
 रुमाल रागती । घर खाणो खापन जावतो पनवाडी माड री कु डी खडखडाय
 न पाना री बीडा नासता केवता चार पान जलग सू जरद री पूडी ।

जीवती—जूण

बापू ! हू काई भूल सकू जका वाता म्हार साग हुई । व सगळा वाता मन हू वहु यात्र है पण अत्र । बगत भागता जाव अर मन जीवण री हर माड माथ धक्का दयन दुख झेलण न छाड दव । हू दुख दरदन ममज्ञ न जीवणू चाहू पण वा कठा ताई जाय न ठ र जाव । हू नी ता चन सू जी सकू अर नी मर सकू । म्हारी जीवण र प्रति गरी आम्था है पण हू जाणू व म्हारो जीवण अघर धम्ब माय लक्कोडो है । सगळा पूठ पाछ म्हारी रिगती उडाव । सगळा बात समभता थका ही हू जीवणू चाऊ अर जीवणू भा सान सू । जीवण र सार ल लम्ब इतिहास माथ जणा हू सोचू ता मन मालम पड क वापू ! थारा काळजा बजर सा कठोर हो । थार दरद रो तो किन हा पतो ही कानी चालता हो । अब व सगळी बात ही रयगी है । हू तो आपरी यात्र र मार ही जीवू हू । निरासा र त्तिना माय आपन याद करू हू । जावण—सधप माय सलगन हूवण रा प्ररणा आपस्यु ही लऊ हू । अब अत्ती ता म्हारो सरदा कानी क हू लारला समस्यावा माथ विचार कर सकू । थ मान सू जिया अर मन सान सू जीवण रा मदस न्यन आग पधारया । हू जणा ही म्हार बार माय साचू वा वेळा हू मन भूल न आपर बार माय माचवा लाग ज्याऊ । म्हारा विचार आपरा भावनावा माय मिलन एक हूय ज्याव । जण थ मन सगा र सूवटा र सार करी ही । जक रो थाडा दीना पली घर माय काई नाम ही नी जाणतो हा । थोडी बात चात चाली । फोडू जाई । हू सगळी बात छिप छिप न सुणती, पाहू देखणा चावती । पण सरम र कारण की कर कानी पावती । थ मन बी अण जाण आदमी रो हाथ पकडाय न बार लार कर दी । चाली बाई सासर र साग हू आपरी छाती माय मूंडा घाल न रोइ जण मन पता चाल्यो क आपरी छाती सम दर सी गरी है । आप आपर सगळा दुखान छाती माय दबाय न मुठ माथ हसारी रखावा रावा हा वापू ! आपरी आस्था र अ तराल रा भाव हूसमज्ञ कोनी सकी । पण दरद री छिया गरी मू गरी हवती जाव ही । म्हारी आरपा जामू डळकावती ठ रगी । आप मधरा बोल्या बेगी ! तू अमानत है दूज घर री धरोहर है ।

जाप म्हार जीवण रो दूजा आधार वणायन मन विना करी । मन घर

रो घणू साच हा । म्हार बाई वन भाद काना हा जका म्हार सासर गया पछ घर माय उछल कूद मचाव । आप लाग रा जीव बलाय सक । बापू ! धारा घर त्वाली हूयग्यो मून घर माय आपरा जीव विधा लाग्या हुसी । मोहत्या परवार री लुगाया रावती जाव हा जर जोळमू गावता जाव ही । हू धी वळा गीत रा मरम कानी समभ सकी पण आज पता चाल है व वी गीत माय वित्ता गरा भाव हा । हू गठ जाडो जाड न सगा र भूवट र लार चाल पटी । ई आस अर विस्वास माथ व आ म्हारो जीवण रो आधार हुसा । जिया ई घर माय आई हू विधा हा ई घर माय सू लम्बी ऊमर पावन व्यासू । पण जीवणी रा काळजा फाट हा । वसण्या फूट ही । पसवाडो परन पाळी सोचया लागी । लारला वाता माथ जकी काळकी सी लाग ही पण व सगळी आज भूत री हूयगी है । जीवणी जा सगळी घटनावा री गरी चाट मू टूट चुकी है । जव वान घाट कर कर न राव ही । जीवणी जीव तो घिगाण अर मरसी मीत आया । दुख दरद री मार सू आ मरी कानी अर नी आग मरसी ।

सोच ही' पराया ता पराया हूव अर आपरा आपरो । बापू ! जक री गाद माय वठ न हू बोलणू सीक्या । आगळी पकड न चालणू सीक्यो । काथ माय चढन सह्र देष्टया । वो बापू तो दूर हुरग्यो अर अणजाण आदमी आपरो । आपरो भी इस्तो व रात दिन वीर वन ही रवणू । चुडले र फूद सो प्यारा । आ किसीक विडम्बना है वगत वत्तो तजी मू भाग । म्हार व्याव र थाडा दिना पछ मा बापू न छोडन भागगी । 4 6 मीना धूळ त्वाय न पाळी माम वन आय न रयगी । हू घणा राई । मा सू मिली । माम सू मिली । बापू सू मिली पण समस्या रो की समाधान कोनी निसरियो । हार न चुप हूयगी । बापू ! थ अत्ती बडी दुरघटना न पाणी जिया पी ग्या । मूडे सू उफ नी करी ।

चालत रो नाम वगत है जर वगत रो दूजा नाम जीवण । जीवण रा नाम जनम है । व तलाव माय गेंठा लगावता मर पूरा हूयम्या । घर माय मुहराम मचग्यो । भीता सू माथो फाड फाड न रोई । म्हारो जीव अत्ता काठी हो के निकळयो ही कोनी । बघाव र गाता साग घर माय बडी ही । आस व धी ही कानी वी सू पली राड हूययो । खुणू छुडावण न जणा थ आया मन देसता ही घारा पग जमीन सू चिपग्या । म्हार साग घरती आकास रोय पडिया । व्याव भी लाडा कोडा सू हूया सुहागण भागण री आसीस मिली । अठ तो भाग फूटयोडा ही हा ।

बापू ! मारो घर छाडणू अर म्हारो रडापा आपन लेय डू या । ये मर तो जक त्तिन हा गया हा पण काया रा कष्ट भीगणा वाकी हा । कवरसा री

मोत सुण नै आप धरती माय समावणू चाव हापण नीता जब धरती माता बन अत्तो सत है आ नी है मीनखा माय । धरती बोनी फाटी पण थ माचा जहर भाळ लियो । मदमे सू टूटयाडो मिनख पाछ उठ सक बोनी । जाही हालत आपरी ही । आपर भाग माय सड मडन मोत रा व तजार करणू लिरयाडा हो ।

वापू ! यारा बाग धार सामही उजड गयो । हू उजडत बाग री रुखाळी राखू हू । थारो डील हाथो सो हो जको कीडी सो दीगवा लाग ग्यो । मुडे माथ वठती मारया मोत सी भारी दीग ही । म्हार सगळ दुख न छिपाय न आपरी सवा चाकरी करती ही । आख मीच न सत्य न झुठलावण रो जतन वरती ही पण साच ता साच ही हुव ।

जावणी पसवाडा परती जाव ही अर आपर लारल भोग्योड जावण माथ सोचती जाव ही । वा जत्ता ही घणू सोचे ही बता ही बीरो जीव तळतळीज हो टावर पण माय बीन दुनियादारी री जानकारी कोनी ही । समझण लागी जणा पराय घर री हुयगी । ससार रो मुख भोग्यो ही कोनी हा बी मू प ली छाती माथ दुखा री परवत टूट पडियो । ओ दुख जतो बडो भारा हो जको बीन चोखी तरह हिलाय दी । विधवा रो जीवण ता इ हा हा जाफतगारा हुव अर चढती जुवानी माय राड हूवणू घणू ही भूडो हुव । परवार व समाज दा यू डाकी दायी रात दिन आख्या पाड पाड न बीन देख अर सगळी जमह खरो खोटी करता रव । होठा माथ जीभ पर पर न पीरी जुवानी री कमजोरी रो चोखो फायदो उठावणू चाव । आपरो स्वारथ सिद्ध करन हूजरो जमारो ही खतम वरणू चाव । जीवणी रसी धात रा वणियाडी है पण ठावा उठाव अर आपरी दज्जत जावरू रागन भला भला र थपड मार देव । आग सोचवा लागगी —

आ सगळा सपना देखणा भूलगी । सपना दखता ही किरे ताण । पली ता सपना री आधार बगो ही आजल हूयग्यो अर पछ थाडो भात रियो आधार सपन दाई आजला हूयवा लाग्या । थाडा दिना पछ बापून आगण माय पसार दियो । मा आई पण बोळी मोडी आई । बापून चौक माय पसारिया जणा चूडो फोडन आई । पण अब क हुव । हाथ सू गयोडो समय पाछा कोनी आव । सगळी गुवाडो ही बीखरगी । घर री भीता भा राय पडी पण चुप करावण आळा काई नी हा । विधवा बटी अर वमावण आळा बेटा क्य देव । सगळारी गरज पाळनआली अक्ली हू ही । सगळा वारज करणा पडिया । म्हारो जिम्मगारी अर घणी हूयगा । हू एक जीवती लाग ही जकी

घुट घुट न मोत र सार जाय अर भाग भागन सगळा काम कर । घुट
घुट न मोत रो इ तजार कर ।

वापू ! आपर जावण पछ ता हू वसक्या हा पडगी । म्हारा तो दा यू
आघार टूट गया हा । मोटयार र मरण मू सासरा छ्ळ्ळ्यो अर वापू र मरण
सू पी र । डावडी परायो धन हुव अमानत हुव जनम देवाळ मा हूई अर नी
हूई बरारार ही । हू मगळारो भार उतार देस्यू पण म्हारा कुण ?

आतम बोध

राजीन रा आवणा भाठ घटा रा पूरा नोकरो । ठड ठड ही आवणू अर ठड ठड ही जावणा । पार एक दिन चढता हा घर सू टुरणो अर पी र रात गया पछ पाछो घर पूगणो । सारो गियाळो ढळता रात सू अर सारा उयाला ढळत सूरज नू गुजर जाव । यस अर ना रा मवद आमी रात ओठा माथ बिराज । ऐ ही सबद सपना माय सूळ । जीभ जाख तिन कतरणी सी चालता रेव । इ न सपन माय ही चन नी पढ । अखी रात बोलती रेव । वन सोयडो मिनख डर जाव । टाबर डर जाव । ओ तो रोज रो घ घा है । घर रो गाढा ई र पाण ही चाल । नी ता कठ ही आवणू अर नी कठ ही जावणू । हाल माय वठा तारा सू रामाण करनी । वाना रो क हाथ मिचस्या रेव कानी । रवणू घणू ही चाव पण सोग रवण द कानी । हाथ जिया जीभ चालती रेव । सबद बोस माय घणा ही मवद है पण म्हार खातर यस प्लीज ना प्लीज नो रिपळार्द सर आत्ता ही सबद है । नूवी नूवी डिकसनेरिया छप । विनान सारू नूवा नूवा सबद वण । पण म्हारो आ सगळा सू दूर रा नाता ही ना । आख दिन हू सबदा सू हा उठा पटक करू । वान हैड फान मू घिपक्या रेव । कणा तो कीनी सुण अर कणा ही चालती घात न सुण । आह्या भपाक्षप करती पीळी लाल वत्ती न झाकती रेव । माथा भस का सा हिया करिया उवास्या खावतो रेव । आगळ्या थोडी चूकी क वान मड खडिज प्लीज रोग नम्बर । हू ता नम्बर मागिया है ।

वत्या क्षपा क्षप करती रेव । आगळ्या फटाफट नम्बर तगावती रेव अर वान नम्बर सुणण र साग वाता सुणता रेव । मामलो हाटल र काउ टर सू वठयो बोल— कुण ? हू छाटू वालू हू हा च्यार नम्बर दो म्पया नोकरा र हाथा माय वाजती चीणो माटी रो छियारी खटाखट सुणीज । हा क केवो ? 10 तारीख न एक मण रसगुला दो बजी चाहिज । तीन सा रो भाव लागसी हा पाच नम्बर न पूडी स जी । छ नम्बर माथ पाणी भेजा हा क कया ? भाव ठीक ही बताया है । आजकाल सावा वा तिन है पूरा दूध कोनी मिल । दूध रा भाव ऊचा है । आ भावा माय घणी वचत कानी । हू । आप हा जणा हुकारो भरिया है ना ता मीठा उत्तर दवता । 'हा । जाठ नम्बर रस

मलाई कचारी । हा मी गपिया वायन रा, रुक्क मात नाम अर पतो व बगत मगळी वाता लिखन अबार विनाय निया जणा सोदो पक्को हुवेलो । लाल साट वपका मार, 'नम्बर प्लोज । फोरटू थ्रो । यस मैडम ।

आगळ्या र साग साग कान सुराफात कर ही वठ । हेतो मिस्टर वृष्ण । यस मैडम गुप्ता । अर काळसिध्या तू आई कानी । हू । ' 'कठ गइ ही ।' म्हार माग ही आ चाल बाजी । आ ध-घा कद सू कर राख्यो है टेम दे र नी पूगणू जर आगल न और कठ मू खरात्र करणू ।

नी ! नी ! आ वात कानी ही । डडा माग एक पार्टी माय जावणू पडिया । ममी अबार जगार ही वार गई है । जाणा रिक् करी है ।

हा वार पाटक वन पूग ज्यामू ।

हू स्यार मिनूला । 'प्यारिय रा आवाज सुणीज ।

'क साग ही नाइन कटगी ।

मन माय रीम आई । किय्याक वेसूरा लाग है ।

मन राजा है दिल रो । अटपटी वाता माथ फिरवली सो घूम जाव । रोगी मू ही फुरसत नी मिल । सरकार रो लाल तीकोणू निसान खूण आळ घर सू पूरा मिट । ई माथ साल मुबाई लाट पोते फिर पण घर री भीता वूट री चामडी जिया तोकळी हवती जाव । आ भीता माथ चूना लाग नी अर मदल रा पछा फिर नी । पट री भाता ही लूखो घान खावता खावता काळी पडण लागगी है । पट री भीता माथ चिक्णासरा पछो फिर हा किया । साल मुआई बधता मूभ्याडो निकण निगान मू गरा हवता जाव ।

मामना नाट वपाभव कर । । लेवा ला ।

कुण मोहन जी व भाव रया ?

दम जाना व स्य उ ।

मयर रा भाव रिया वकीम ना आना रुख तज है सीम तीम पदसा तजी मग

सो पटी खरीदो ! एक हजार सेयर वचा । बजार भाव पाछा भाव मुगताय गज्यो ।

भाव निया । वेच्या निया वेच्या ।

ना आना दो आना । घोटा री घुडसाल सा हाकी । हाका ऊचो उठ
अर पाछो नीचो पड जाव भाट सो । हा ! हार जीत ! री बात नी । रोकडी
अठ नी कोई मर अर नी कोई जीव । ओ मेळो तो ईहा ही चालमी ।

अत न वाना माय आव—फट लाइन काट देव । नालायक वठ रा ।
लम्बी घटी देवण रो ओ पुरस्कार । नालायक । खुद री भुजळान् दूजा माय
उतार । पाछी घटी देव न बोली— प्लीज पाना टली ।

सोरी । सामे खडिय नीकर न कहुपा हा टलीफोन माय आवाज
आवगी माफी चावू ।

सामे चाव भीत ही हो ।

वाना रा पडदा भोपू री आवाज मू फड पडा उठ ।

657 प्लीज । रूप सिंह ! क कर है वठ । आग्यो दिन गवाय दिया ।
काम कर न काज । तन तो कोई ओळाव चाहिज । आग्यो दिन बठो-बठा
चिलमा फूक । तू गोणाम वदई मत जाया कर । म्हारा निक्लगी अक्ल जणा
तन गोणाम विनायो । तू टक रो आदमी नी । गोणाम टकन अवार रो अवार
गिद्दी आय जाम । अठ वोळो काम पचियो है ।'

ॐ ! धर री काल चक्रिय है जणा तू समय ।

सगळा हिसाव कर लई । दम बीसर र सरच काना नी दखी ज ।
आपणू तो काम हूवणू चाण्जि

सगळी बात करनी

'हा

'रात न मिल लई ।

वगत मिलसी ता

ठीक है । अठीन ना आव तो कोई बात नी । घर जावण म प ली
टेलीफोन कर लट्ज ।

ओ है मिनल रो मान । आदमी घणू ही स्याणू है । समभदार है । गघो
है एक नम्बर रा । कट्टी काम नी कर बठा गप्पा हाक । सदा ही भनो
बाज । गरज रा मोल है गघो हीरा मू मूगो है । हीरा मूत र रेन माय व व

पाडोसण बोली—घणी मरमी ता ननाम रा टाकरो नी मिल । तनखा
पली तारोख न मिलसी । बती ही मिलसी जती लारली न मिली ।

‘आपणू जीवण र्हा ही चानमी हैड फान उताग्न घीर सी बोला ।

हा । ईहा ही चालमा । पावणा जीमता रमी । राडा रोवती रसी

माच ही जीवण रो जा ही हाल चाल रसी । सोच तो सोचण रा टम
नी । जैकदास सोचण री टम काड न साच तो सोच्योडा मगळो गुड गावर
हूय जाव । कीन कव अर कीन नी । अे हाल चान तो ईम्याही रसी । सामली
वत्ता भपा पप कर पण हाथ माठ ऊटे त्रिया मिरक ही नी । चाय र प्याल
मू उठती भाप मन सू लिपट जाव । मन ऊचा उठतो जाव । जणा एव
चुस्की लेव । मन ठौड ठिमाण आय जाव । मन भागतो ही फिर । आय लार
दख कोनी । माड कन खटको हूव जणा हाम बावड । हैड फोन कान मू
लगाय न पूछा

नम्बर स्लीज

हू एव घडी मू नम्बर मागू हू । काई पूछ ही कानी 873 रेवा ।

सादन खराब है । घटी जाव कोनी

रीमा पळतो टलीफोन गल देव ।

टव बुकिव नाट वेगी वेगी भपापप कर । आगळ्या कठपुतली
जिया नाच । काना री वाम्बी मूनी नी रव । घ-घा जमै जणा हिया उचाट हूय
जाव ।

हूहा । हेनो । वम्बर । वम्बर 3671

यम । वम्बर 3671 ।

‘महेगकुमार बोडू हू । म्पारा पुग्जा भेज्या कोनी ।

मुनीम जी मू मालम करू मुनीम जी पूरजो भेज्या कानी
हा । क कया ।

आत्मी रुपया नयावण ग्यातर गया है । आवता न भेजू ।

हा कल्हत्त म टेक

आव

कनकना 46312

‘हा । कराआ बात

हा । महेगकुमार बोलू

'आपरी गाठा माय घूड निकळी। म्हान खोटो माल भेजियो। मान हळको है। गिलो है। थारो माल पाछो उठाय लेवो।

'ही। ही। आपरा माल म्हारी आख्या रे सामे पक करवायो हा। भूल सूं एक जाघ गाठ हलकी हूसी। आप सगळो गाठा खुलायन देवल्या।

नी। नी। दो तीन गाठा देखीली। जर नी

'आप म्हारो विस्वास करो। मान चोरतो नी निकळमी

(मन माय हस) माल खराय निकळ तो सगळो माल म्हारो पाछो भेज दिया। मराव माल रा बट्टा लय लिया। आपर साग गडबटा नी हुवली।

नी। आप आपरो माल पाछा उठाओ

माल धाखा ह अर नूवा। नूव माल माय सीत मालम पड सुखाय न दख लेवा। कम पड तो उजन माय कम कर दीज्या। थ म्हार जूना थार "यापारी हा।

टेनीफोन री लादन बट जाय।

मन माय मूळरन फोन रात देव।

धान माय वाकरा धी माय डालडा टालडा माय चर्बी साड माय खूण मितावणू अठ "यापारियो रो सहा घ-धो है। भूठ वातणू यापार है। हराम री कमाई लाभ। दिन सगळो ही थरी खोनी खोटी थरी करण माय निकल ज्यात्र। रात पडता ही गुजर ज्याव। ओ थ धा किया चाठमी। पट तो दरडो है।

भीत माथ टग्याडी घडी छ रा टणजा निया।

आम तार देख। माड कानी झाक। ड्यूटी आप री वगत दूपयो। हैड फोन उतारन थार जाव।

रात पड ही।

मोत जेडी चुप्पी

जायी जिनगाणी भूय मिटावण सारू हा गवाय दी पण आ भूय वरी पावण आज ताही नी मिटी । आज हू ववम हूयन आ री दया माथ पडी हू । आस लगाया पडी हू क आ बीनण्या माय मन कोट नोय बगत राटी घाल देव । रोटी तो नो यू बगत मिल पण टम टाळन अर भव भव करन । रोटी खावणू अर धूड खावणू वरोवर है । पट री आतडया भूय सू मरवा लाग जाव अणा हारन रोटी खावणा पड । भूया मरता री मगळी रीस भाग जाव । बी रोटी माय नी ता स्वात् हूय अर नी नह । ण कारण गा रोटी खाई अर नी खाई वरावर हूय । किती बडी विडम्बना है । ज क्वास भूख ही नी लागती ता कुत नाई आ र वारण आग नी पत्रिया रवणू पडता । लाग क्या वर है क मिनव मू रोटी मूमी नी । पण आ वात माचा नी है । राग परवार र वूटा बडेरा मू पणा मूमी है । मजबूरी मू वान राटी घालणी पड । वान टूपो दयन मारियो नी जाय मक । लोणा री लाज मरम र ग्यातर आ वाम ना करिया जाय मक । रोटी न तरमता आन्या पथराज जणा जार पाता पाती माय मू वाद आयन घाली मिरवाय देव । घान रा किती बडा अपमान है कि माय लगायन खावण रा नी मन हूवता मातर ही खावणा पड । बिना खाया तिन निवाळण बडा मुम्बिल हूय जाव । आडामी पाढामीन बीनणिया री मिवायत वर नवा ता पछ श्रीवणू ही मुस्किन हूय जाव । घर माय महाभारत रो छाया रूप वण जाव । राटी रा तो साला ही पड जाव । छाती रा भार निया ही मरणू पडमी । आया जावण छारा री माग मभाळ माय गुजरग्या अर तूपाय माय मन आरी दया माथ रवणू पड । ज क्वास हू टपो खायन

दाग ! रागे गा र ओरी माय बडतो पोता बायो । 'ल्या वेग ममळता डावग बाग— आज ता बोना माडा कर तिया

मगळा हा बगत है

ताडया ता बाळा चडयाडा नीव ह आरी र माड मू आवन च्यानण कानी ण न वाली । फूटपोड टाग मा आवात्र कान र पडद मू टवगर् आया तिन खावण न मर । मर न माचा छाड । घर माय घ घा कता ३ आ ता पी

दीग्य । ठा पडगी मन की हूय ज्यासी जणा । लारन न्येय दीना मू मन सिया
 न्वा च्चे । काल हू मरज्यामू जणा राटी कुण म्हारा बाप घालसी । साग ही
 छार १ हुकम हुयो— पाणी रो लोटो राख द । भूल लागमी जणा मत ही पाय
 लसा' छोरो घाळी राख न पाणी रो लोटो राखन चल्या गयो । आम्ह्या रा
 सोजी थोडी ही । छिया तावड रा परक लागतो हा । वान ऊचा सुणता हा
 पण डाग का सा बचन वान र पडन साग साग माघो मू भी टकराव हा । घाली
 न टटोळता हाय डोकरी रा पाछा हूयग्या । मगळी भूख मिटगी । डोकरी
 घाळी पमवाड मिरकाय न पाछी माच माच बठ न सोचवा लागी

ज कणाम आज म्हारो काळत्रा भरिया हूवतो तो मन आज रा दिन
 देखणा नी पडता । लोग मन घणी ही समभाई क बीनणी न मगळी भाळावण
 मन दीज । दूम छत्रो वन राखज । पण म्हारी राड रो मत मारीजगी । जका
 थोडो भोत लण न्ण हा छोरा न भोळाय दियो । गणो गाठो बीनणीन दय न
 निगवाळी हूयन बठगी । अब मन कुण पूठ म्हार वन क है ?

मियाळ रा दिन हा । दिन छाटा हूव अर रात बडी । भगती खातर
 रात तिन दो-यू एक मा ही हा । रोवणू अर गोवणू अ न्येय लेख हा विघाना रा
 निगयोडा हा जका न वा भाग ही ।

जाणी पिछाणा आवाज सुणीजी ! 'राकी मा सोयग्या वाई ?

पगा लागती बीनणी बोली— आओ ! दादी मा । साग छोर न हलो
 पाडियो— किमना देख ! नानी जी सोयग्या वाई ?

आज भगती रो मन घणू उपास हा । की मू बात करण रो मन ना
 हो । जा भायली छोटी तो है पण है घणी स्वानो अर साची बात कबण माय
 गीरी लाज सरम नी राख । किसनू आयन ओरी वन हला पाडियो ।

भगती पनूतर सिया क जाऊ हू वेटा ।

डोकरी अण मण मन मू उठ न घोती रो पल्लो ठीक करिया । लखडी
 रो सारो न्येय ठावा ठावा पण राखती चाक माय आयन बठगी । गेती—
 बीनणी । अबन तो वोळा दीना मू आ

वाई बत्ताऊ काकीसा ! छगन र छोटकय छोर न भाव (मियाणी
 बुवार) आयग्यो हो । ई कारण बठ ही जावणू तावणू नी हूयो । बुवार उत
 रिया पद्य कात बीन घान दिया जणा आज माताजी री कडाई करी । परसाद
 री तावमी लय न आई हू । कटारी दबती बोली—चाख न बत्ताया भूयोडी
 तावसी किमीक घणी है ।

दबती शक्ती वाली—'वीनणी ! कटारी गाली कटोरी करन पाछी देवो ।' वीनणी धारो क कवणू ! तू हाथ री चतर है । रसोई कार् तू ना टाक देव माय ही घणी चतर है ।

रसोई माय स मधरो जावाज जाई—आर् । गान्नीमा थोडा बठो । चाय छाणन ल्याऊ हू ।'

जर वीनणी ! अजर चाय क्यू वणार् । साणू खायन आई हू । मन अठान आवती दखन वे वार जावता बोल्या—बोळा दिना सू वार जाव । वेगी ही आय जाई ज । हू कय र आइ क जवार गर् अर आइ ।

दान्नी सा ! आ नी हूय सक रसोई माय सू वीनणी वाली चाय छाणन अवार ल्याऊ हू । तीन गिलामा माय चाय ल्यावनी वीनणी बोली—गान्नी सा ! आज आय बोळा दिना सू जाया हा । म्हारा माथा दूखे हा । म्हार यातर चाय वणावणी हा पर जाय आयग्या जणा मौको सजग्या ।

डोकरा पूछ्या—वीनणा ! आज माथो किया दूय हा ।

काल ठण्ड माय बाळा गारा धोया एक मू ठण् लागगी अर माथो दुखण लाग्यो ।

माय चाय परती डोकरा गानी—ठण् र तिया माय धाटा ध्यान राग्याकर ।'

याग चोचला हाल ताण गया कोना चाय पीवती काका बोली—'वीनणा अता भोळी कोनी क कोई दो वार जीम ज्याव । आ एक र माय ही गोळ घाण । कमी म्याणी है । मायता रा जीव सदा ही काचा हुव डाकरो वानी ।

गिलाम रायन कटारा उठावती काकी सा बोली—'सामू न चवामज नावमी कितीक बणी है ?' आ कवती पाछा गइ परी ।

वीनणा वाली—ज्यार घडी एक घान गायन बठी है । चाय री गिनास गट गायगी । जा ता कानी बाला हू जवार ही जीम न बठी नू । चाय नी पीऊना ।

धो घा उबळ । खावण न मर है ।

डाकरी रा चाय पियाण ज र हूयगी । उल्या करन पाछी कान्नीज वानी । तू मनै ही जर हू पावला हू मागा ता काना डाकरी दगती वानी ।

हू सगळी जाण ही । जक सू वसी वणा र त्याई । पारा विस्या हीया पत्रयोडा हा । कय दवता वीनणी ह चाय नी पीऊला । अवार खाणू ग्यायो है । 'थ चाय ग्यातर मर हा ।'

डोकरी रा ऊपरला दात ऊपर रयग्या अर नीचला नीच । बठ मू बीरो उठणू मुस्किल हूयग्यो । वीनणी आई अर घर माय राड घालगी । मग वग हुयोडी डोकरी घोडी ताळ बठ ही बठी रही । पछ श्येकरी आरी मांय आप य सिरख आठन रोवा लागगी ।

हू कताक वाळा चाध्या है जका री बटलो चुकाऊ हू । थ पुण्यात्मा हा । आपरा काम सळटाय न बगत सर चल्या गया । बीमार पडिया जणा मन समभाई क हाथ काठी राखीज । अे बहू वटा की काम रा नी है । बगत मर रोटी ही नी घालला । आवण आळो जमानू घणू खराज है हाथ न हाथ खावण न तयार रेवलो । पण म्हारो राड री अकल बहू बेटा काडनी । वारी बात नी मानी । ई कारण आज फोडा मुगतू । मन क टा हो अे सगळा म्हार साग ईसी करमी । चार री मा घडे माय मूडो घालन रीव । छारा तो घाघर री जूआ वणग्या । भागौती सोच ही । विचारा री लडिया टूट ही पर मन ही ।

म्हारा कता क मोह है क हू जक घर माय वीनणी वण न बठ ही पग पसारू । खडा जाई हू बठ सू ही वेटा पोता र ग्यात् माथ चड न जाऊ । ज कदास हू छोटेट सू अता माह नी राखू ता मन आज ऐ दिन नी देखणा पत्ता ई मोह र कारण ही मन ऐ दिन देखणा पड है ।

वास हू ई मोह सू पारी हूवती

रिक्कू

काई जावण अक अवखी मारग हे ?

नी तो !

नी काई अवलाइमा, मुसीबता अर आफता सू भरियाड लाम्ब मारग रा नाव ई जीवण है ।

मन र हारचा हार है अर मन र जीत्या जीत । बाकी जीवण लाबा कठ ? आन र फक्कण र साग जीवण बात । कई काम अधूरा हो रय ज्याव अर ससार सू विदा हूवणू पड । पछ मारग लाम्बा है ?'

'हा ! इहा देख जणा ता जीवण सूपन दाइ लाग । तो पछ दुनिया यूक्यू केव क लुगाद रो जीवण विपदाऊ मू भरियो है । भाग जोग सू ज काई भरी जवानी माय राड हूय ज्याव तो सगळा क्वण लाग अब रामजी ही इरा वेडा पार लगासा । जमानू घणू खराब है । ज कठई पग ऊक चूक पड ज्यासी आप रो जमारो अर घर घराण रो नाव बिगड ज्यासी । खुद कठ ही कीनी रसी । इ मू तो ओ ही आछो है क आपरो घर पाछो बसाय लवणू चाहिज ।'

सूती सूती खुद ही विमला सुवाल पूछ ही अर खुद ही पडूतर दब हा । सगळा सुवाल जवाब जीवण मू ग'रा ताल्तुक राख हा । ठा ता एक पल री नी पड पण सोचणी सौ साल री पड । दुनिया घणी स्याणी है । पगा बळती नी दीख पण डूगर बळती सगळा न दीग । करियो काई जाव । विमला र ब्याह मीर ग रा अघारो हो । बी माय की नी सूय । पछतावती बा इ अ धार माय आख्या फाड फाड न मारग जोब ही । सिमा मरती रिक्कू न काठो छाती सू लगावती जाव ही । मा री सगळा ममता सीमा ताड न रिक्कू माध रळक री ही । विमला नह भरियो हाथ होळ हाळ रिक्कू री पूठ माथ फर ही । रिक्कू सनह री सीतल छिया माय निघडक नाद लेव हो । विमला फर सोचण लागबा लागी— म्हार जीवण अर घोर अ धार माय की फरक कोना । इ अघार माय मूरज री किरण चमकनी मुस्कल है । मन ता आया जीवण इ अ धार

माय हा काटणू है। निरामारा सास छाँता बट्टबडाई— मर म्हारा आगा तर चाहे सुधर या बिगड पण लर रा ता भविष्य बणाउणू है। हू आस जीवण रावती रस्यु पण ईन नी रोवण दयू। माचण र माग साग धीनडिय रा पूठ माथ हाथ फरती जाव ही। जाण रिक्कू री सगळा विपत्तावा हाथ र सार सू उतार उतार फक ही।' धि ता फक्त त्ता है व कठ ही म्हारा नासमभी सू ई रा भविस नी विगण ज्वाव।

विमला साच हा म्हारो मोटयार ता मरग्यो। जर त विचार र साग ही विमला र हिय माय हुक उठता लागगी। वा मूती नी रय सबी। तिस मिलाय न उठ वा लागी। पण रिक्कू विमला र गळ माय बाध घाल न सूता हा। बो आपरी बाध जर बडरी करली। हिवड री हुक पाणी वण र आख्या मू निसरवा लागगी। जळ जळी आख्या माय एक माटयार तिरबा लाग्या। बाल्या— बस! हिंमत हारगा! काई तने धार माथ विस्वाग बानी! वा दुनिया है। चन्घाड न हम अर पाळ न भी। त रो की सू ही नातो रिस्ता बोनी है। आ ना तो बुरा माच अर नी भला। पाणी ज्य आ रग हीन है। आ तन धारा विचारा जिसे दीस। धारा विचार आच्छा है ता तन दुनिया जाछा दीवसा माडा है तो माडी। बार नव जीवण री सरूभास है तू घबरायगी। दुनिया न दय व परस। सगळा चाजा दीस जिसे नी हुक। काम पडसी जणा फरक निजर आसी। तण वास्त विवक री निजर सू देव। सगळा रा सुण अर समझ न काम कर। ना ता जीवण आम्हा ह्य ज्वासी। †

इ र साग ही विमला री आख्या मू माती ढळक न तविए माथ बिलरवा लाग्या। जावण रा मारग किता लाग्या है अर दिन कता छाटो है। मिनस रात दिन घाणी र बल जिया लाग्यो रेव। पग पाछा नी देव।

विमला आमू ढळकावती जाव ही जर रिक्कू री पूठ माय हाथ फरती जाव ही। अ धारा वारणू तोडन माय आवतो जाव हो। लारल त्तिना री वाता फौर फौर न पाळी आख्या आग आव ही। विमला अणचिती वाता माथ विचार कर ही—घर जाळा दिनुग वेगा ही उठन पढण लाग ज्वावता। पछ पत्तावण सारू ज्वावता। दस बजी घर जायन खाणू खायन स्कूल जावता। स्कूल मू छुत्ता ही पाछा पत्तावण सार जावता। पी र एक रात गया पछ घर खाणू खावण न जावता। पछ आप पढण सार जावता। रात न दस साती दस बजी पाछा जावता। रात दिन चकरी बम हुबडा चालता रता। छुट्टी छप्पाटा न घर र रामन पाणी भेला करण माय गुजर ज्वावता। सामू फवती बटा।

रात तिन साम्यो रेव । घाडा आराम कर लिया कर । दाळ राटा भगवान
दव है । आपण किमी डावडी कुआरी वठी है जक मू इत्ती सचळ कर ।

व हस न पडूत्तर दवता—मा ! घारी आसीस चाहिज । घर वठा रा
गाडा जुल् ज्यामी । रात दिन हाथ-पग चात्ता ही रणा चाहिज ।

'अर ! वटा ! घारो त्रापू डाकरा कवनी—महनत करता करता
म्हन भा जुआनी माय छोर्या । व जिया जठ ताही आपरा फरज पूरा करता
रया । पछ म्हाय माय भार छाड्या जको हू उतारू हू ।

विमला पसवाडा फरवा लागी ता रिक्कू काठी पकड ला । रिक्कू रा एक
हाथ हाचल चूसत टावर दाइ विमला र हाचल माथ हो । रिक्कू हाचल चूसना
ता छोड दिया हा पण हाचल रा नहू हाल ताइ हा । विमला फरु सपना
दखवा लागी— रिक्कू वाटकी माय चुरमू खावता घाडा अर लिहावतो
घणू । कणा कणा ही विखरयाडा भारा चुगन खावता अर आपरी दादी र
मूडे माय दवतो । दादी अपार आन द माय हूयन धिनडियन छाती
लगाववी । एकादमो र दिन तादी मूडा नी जठती जणां वा विमला कन
विनाप दवता । रिक्कू री नटखट प्रीत दखन विमला रा हाचल गीला हूय
ज्यावता । विमला पाछा पसवाडा फरन रिक्कू न छाती सू लगायो अर आपरा
हाचल कब्ज माय सू वाट न रिक्कू र मूड माय दियो । रिक्कू आदत मुजब
मूला हाचल चूसवा लाग्या । मा री ममता री घरो रिक्कू र असवाड पसवाड
घूमवा लाग्या ।

विमला पाछी साचवा लागी —जणा वी री आस बांधी जणा सामू न
कता हरम्व हूया । सगळा दवी दवता री गठ जोडे री जात बोली । ज कदास
वा सार्ती चालती तो फट टाक दवती । बेटा ! अती खातावल क्या री है
सावळ चाल । हू मन माय साचती माजी जूना विचारा रा हा । बारा मन
रामण खातर चुप रवती कहु मुजब काम करती । आ जद हूया डाकरी
गुवाडमाय गुड बाट्या ।

माजी ! इतरा खरचा क्यू करा लाग कही ।

'वटा ! बोना बरमा पळ' डोकरा गली— 'बडेरा र भाग सू घर माय
पाळी बाजी है । आज ता करू जतो हा थाडो है खरच कारण आलो दाता है ।
म्हारो व माजनु है ।'

सगार री मावा रा चड्या जिवा डाकरा घणी हो चावै हो क बटा पाता पान् चड र जावू । पण भाग री रेखा कुण जाण । रेखा माय मख कुण मार । बी री आन्या आग बटा पग पमार दिया । डाकरी भोत सू माघो फोडवा लागी । करिघो क जाय विधाता रा आक टल कोनी अर मोत र आग किणी रो जोर कोनी चाळ । एक सारो पला ही छिन्काम दियो । जणा डोकरी बटे रो आधार मान न आप रा बिल रा तिन वाडण री साची । काळजो बजर रा बणाय न टावर न पालियो । भरी जुआनी माय विधवा हुयगी । गोत्र रा लटन पाळ पास न बडी करी । पढाय लिखाय न पाव करियो । लोग न कय सुणन नोकरे लगाई । डोकरी आपर बिय रा दिना न भूलगी । रिडू र हुवण र पछ तो डाकरी रा दिन राम राम माय गुजरवा लाग्या । हूणा न कुण टाळ सक । एक तिन आपरी आलाद ही मझधार माय छोडगी । डोकरी हिम्मत नी हारी । बहू अर पोत न छाती सू लगाय लिया । वगत र साग छाती रा घाव भरवा लाग्या । मुग रा तिन बाछा हूव जर बिल रा दिन लाम्बा । डोकरी रा गोडा टूट्या पण वा हिम्मत नी हारी ।

विमता रो पी र जावणू जावणू सरू हुयो । तारला घाव भरीज बा लाग्या । बाप रो सारा जर डोकरी री आसीस टूटत परवार न सभान राखा हो ।

होळ हाळ मायता र अठ नवी बात हुयवा लागी । विमता र साम बाता आवा ला गो । हूवण आळी बात तो हुयगी । अब फर घर बसाय लव ता चोखा रेव । बात न पग ऊक चूक पड ज्यासी ता परवार री नाक कट ज्यासी ।

विमता आ सुणता ही बिलरगी । सोच वा तागी- काई म्हारा जीवण अता सस्ता है । हू जग्या जग्या भागती फिरू । मिनख र साग सावती फिरू । मिनख किता ओछा हूव । टावरा न पालण खातर दूजा व्याव रो नाव कर । व बडा ही आछा हूव । क सी की कर सा की । मन राजी राखण खातर आपरी प ली लुगाई र टावरा न मारसी-कूटसी । का बा र नानेर भेजसी । म्हार टावर माघ ऊपर स्यू नेहू दिशासी पण मायल मन सू दुतकार सी । वम राखसा । साग सावण रा बात करमा । म्हारो सगळा मान साग सावण रो हुवला । काई हू अती फालतू हू । मावण खातर मरू हू । म्हारा जीवण रा आ ही मोल है । नी ! नी ! हू को करूनी । म्हारा जीवण निजू है । बी माथ की रो ही अघकार नी है । डाकरी जकी म्हार म घणा आसा राग्य । धीरी जासा रो आधार रिडू है । बी न हू लावारिस जिवा सत्क माथ ना फेंक सकू ?

जका र वस न हू पट माय राख्या । म्हारा दूध पायन पाळ पासन पगा
चालण तातर खडियो किनो । अब वीन घक्का दयन पटक द्यू । नी आ नी हूय
सक । वा ! वा म्हारो अस है । एक री अमानत है । डोकरी रो सारा है ।
म्हारा जीवण अता सस्तो कोनी । हू विस्वास दियो है अर विस्वास लियो है ।
विश्वास घात की कर सकू । डोकरी न घक्को दयन मोत र मूडो माय नी
धकेल सकू । हू म्हारी कूख न सावारिस छोडन नी भागू । रिक्कू न पाळ
पासन वडो करस्यू । मिनस करस्यू । खुद कमाम्यू अर दाणी पोत न
पाळस्यू ।

जीवण री आस्था

जर आ जीवण कित्तो लाम्बो है कित्ता अटूट है। मन सगळी जग्या समझीता कर र न चालणू पड। काई म्हारो जीवण एक समझीतो मातर है। का हूँ समझीते री माठडी ढावण खातर ही जनम लियो है। समझीतो छोडन म्हारो बी अस्तित्व ही कोनी है। का हूँ आ कय सकू क हूँ जीवण अर समझीते री बीचली उडी हूँ। ज कदास विरोध करू ता सगला मन उटाय न बार फक दसी जिया चिकणास माय सू माथी। आघो मूतो आघो जागता जगू साच हो। बीरो सोचणू अत्ता ही साधक हा जत्ता बीरा जीवण। भरी जुआनी माय लू लो हूवण पछ जगू खुद ही जीवण मू मन मू आ कह्यो जाय सक बो इ ससार मू हा लू ला हूय गया है। पगा सू बकार हूवण र साग साग मान इज्जत मू बेकार हूयग्यो। साग रा मार र माग साग लिछमी री मार भी पडवा लागगी। राम रुठया पछ सगळो ससार भी रुठवा लागग्या। उपक्षा घणा झिडवया बार बार री टाक सू बीरो मन सागीडो भर ग्यो हा। गरीबी अर घणा दालडी मार सू जगू जत्तो उघवग्यो क मौत रो भायला वणणू चाव हा। पण मौत भी सुग जिया जगू मू आटी पाटी लयन सायगी। जकी बीरो सुध बुध नी लव ही। जगू रो मन जगू न छोडन भागता जाय हा।

जगू सूता सूता सगळा न भागता देख हो पण बो किन ही का कानी कय सक हो। आज वा पडताल है नियाडी रांगी खाव है। पडताल जादमी माय नीता बुद्धि हुव जर नी समझ। सरीर सू समझ सू जका निमलो हुव बारी कठ ही जरूरत कोनी हुव। ना इ गमार माय नी बी ससार माय। ईस्य फालतू मिनख न मौत रो बुगवा भी नहीं आव। सूत सूत जगू री कभर दुग वा लागगी। पसवाडा फरण रो जतन करिया पण पसवाडो फरियो कोनी जाय सक्यो। इ परजतन माय गोडा गाभ माय सू वारे निक्ळ आयो। बीन देखना ही आर्या माय सू चौसरा चाल वा लाग्या। मूडे माथ हाथ फेरिया तो बध्योडी ढाढी माय अणमाल माती बिलरोडया मिल्या। ओ रोवणू ता सगळी जिणगानी रा है। इ कारण आस्थारो पाणा भी सूखवा लागग्या है कत्ती अजीब बात है अथा मिनख काल ताही स्वाणू अर समवदार हा। आत्तासी

पाडासा बूझ न बात करता। सलाह-सूत करता अर आज बा ही मिनख बकार है। झक्की ह। करतार। थारो खन बडो ही निराला है।

जगू इ कोठडी माय लारल कई बरसा सू है। सगली भात रा दिन द माय गुजार दिया। जीवण र तिरमाण री सरू आत भी अठे स्यू ही हुई। दिन सारा आया जणा चमक तक आई अपणायत आई। अ सगळा सुख जिया आया बिया ही पाछा चया गया। पण आज। आखी रात तिल चट्टा बिस्तर र सार सार फिर। छटमल सारा रात खून चूमै। अत्त न कोटडी रा थारणू हडबडीज न खुल्या।

कुण

जा तो है है

दरमण कर आई

ही

इ क साग हा लटटू चम गया। कोटडी च्यानण मू भराजगी। बजा उमम है भाग बोली-एक दो दिन माय बिरखा आमी। आ कवती पाणी री मटकी वानी चाली अर बोली-ध पाणी पीस्यो क

'ही

सरखा छलन पाणा पिया अर छल न जगू कामा चाली। साम देखन जगू पूस्यो सुबला बठ।

नीच ही रपया उपक्षा भरन वा पढूत्तर गिया।

हू। एक दयाडी जलन हुवार साथ निसरा। पाणी बठा नीच उतगिया जणा इहा मासम पडियो क एक गरी ठड काळज माय समाइज हैं। पण आ ठड पल माय ही पूरी हुय ज्याव। मन आशा रो आधार साजता फर पूछ 'छोरी हालताड वानी आइ ?

सगळी भुभलाहट एक साग हा फूट पडा। बाली— आय ज्यासा। बी न कोई खाव है क ? माडो बगा आवणू तो बीरा रोज रा हा घ-घा है।

आसा एक साग ही मुखायगी। जोभ बडी चालू है। जठ बीरा काई वाम हुव वा लळ-सुळ न बोल। जठ काम नी हुव वठ तुम्ब जिमी वेडा हुय ज्याव। सामन माय डाग भी भार।

जगू र मुंड माथ मुरदानगी छायगी। बरसा गू बीमार सा, मुंडा पाळा पडग्या। निडाल हुयन जगू पाछा मुंडा फर सायग्यो। कोटडी माय

मोत सौ स नाटा छायाग्या । वा आ सगळी बाता न रही वागज जिया उडावन
हताइ करण साह बा'र चली गई । पण जग्गू र डील माय एक साग ही सा
सौ जुआला मुखी फूट पडिया । जासू टलन जलन मिटाबा लागग्या । आ उपक्षा
आ पणा रोजीन पाणा दार्द पीवणी पड । वणा आय लागगी पता ही बानी
चाल्या ।

पाछा नोद टूनी जणा मालम पडिया क छारी दफ्तर सू आयगी है ।
वपडा बदल न सडाम गई है । बी री मा छान छान बी रो मनी वग सभाळ है ।
मनी वग माय मुच्याडा नोट आपर भाग माथ राव अर बी री मा र मुड माथ
चमक दव । पण इ चमक माय एक घुणा है लालच है । लुगाई कती स्याणा
हुव । बीन की माथ ही विस्वास बानी । अठ ताही आप माथ भी । मा बेगो सू
छिप्योडी कोनी अर वटी मा मू । घडे जिसी ठीकरी अर मा जिसा डीकरी ।
मनी वग पाछा हा टकन राय दिया । आस्वस्त हुयन सागी जग्ग्या आयन
बठगी । घाती र पल्ल सू मूडो पूछघो जाण आपरा चारी उत्तार न फक दी
है । ई कल्पना मू ही जीव मोरो हुयवा लागग्या । आ बात कोई भाज ही हुइ
है इसी बात कोनी । ओ राज रो घधा है । दा यू इ बात न जाण पण समझ
राखण कारण चुप है ।

छोरी सडास सू आयन हाथ मुडा धोया । खाणू ऊत निरलव भाव मू
खावणू सरू करियो जिया कोई वगार काढ है ।

रोटो चाखी कोनी क ?

चाखी ही है ।

फर ईया किया त्वाय ह ?

आज भूख थोटा है ।

आज बोळा माटा कर दिया ।

तन बठी बठी न लाग । रोजीन रो ही वगत है । खाणू त्वायन रबाबी
घाय पूछ न राखी । पाणी पी न जग्गू सू हताई करण लागगी । थोडी ताल
हयाई करन नाइट नम्प जलाय न सोयगी ।

डीकरी जत्ती ताल जग्गू सू बात करा बा वगत बडा ही सोरा यतीत
हुयो । जग्गू रा दुनिया माय आस्था अर विस्वास जग्ग्या । आ दुनिया माय
घोयो ही नी है भला मिनय भी है । जवा रो वाम भनाई करण रो हो । इ
ससार माय सगळा मिनख कूडा अर धोखे वाज हुवता ता आ दुनिया ना
चालती । इ ससार म सगळी भात रा मिनय है । चाखा भी थोटा भी ।

पुरानी बाता पाछी यान् करवा लाग्यो । जणा रो सह्र माय आयो हो तो बीरो जाण पिछाण रा काई मिनत नी हो । दूर गाय वा एक आदमी अठ खता हो । बी रा ठीकाणू पत्तो लयन अठ आयो । 7 रामजी रो वरी आपरो सगळा परिचय दियो । काम लगावण रो कियो अर विस्वास न्ठियायो क काम घणी ही इमानदारी स्थू कर स्थू । 5 6 दिनां म नीररी सगाय ली । धाडा दिना पछ भील वन ही र बा लाग्यो । छुट्टी छपाटी बी गू मितण राय जावता । ज बी माय भगवान नी उडता ती पाछा घपरा दय । तिकाल देवतो । पण वो एक भलो इ मान हा । बीरो आ एहमान भगवान गो है ।

होळ होळ आपरी महनत सू सगळा माथ विस्वास जगायो । पायज पत्तर भील सू गिदी, भील सू घर पूगावणा सरू कर दिया । विस्वास जगण गू दर मावा भी बटवा लाग्यो । तो एक बरगा पछ घर माली 7 अठ ही प थाया ।

भील रो कमरा मितग्या । थाराम गू तिन कट्या लाग्यो । छारी हुई । पत्ता क छारा क छारा । एउ ही मान है । धाडा वरग जागम गू गुजारिया ।

वानस न लयन मीठ माय ह्ठताल दुयगी । हू गिनी ग ग्याम वारमी लवण सू ह्ठताल माय नी गया । चौकोर ग काम न्ठिया । गान तिन माग रागता घरणा न्ठिया जाता भूय ह्ठताल दुई । 25 30 तिन पछ ह्ठताल पुग हुई । सगळा वारमां वाप वापर काम माय जायग्या । मीठ थारी मरु चानवा जागया । हू पाछा मापी काम माय जायग्या । वारा न्ठिया माय अर्धी मथा करा जारा पायना चाखा दुया । विस्वास त्रया दर र भा र माय ददा तरी हुई । क ई म्हार मू म्भार माया उग रा । पुग 7 तिनो माय नीह थनी हुव । ताम गू गिनी जाव हा । भा माय थक्का लयन दुाम म नी र लण न्ठिया । पगा माथ जारा निकळया । 10 15 तिन ता ही दरपलाय माय बेहाम रैल्लो । दा गू पग वाटन अटया कर न्ठिया । 21 म ता वरु दरपलाय गू छुट्टी हुई । तवा पानी रा सगजा सरवा माळ मू मिश्रया । माय र्थ हा मामिक वरवा मिलवा लाग्यो । वा अता थारा क था र्थ विद्या ही हुवतो । हाळ हाळ गरीरो पाछी भायला घातवा लागया । नुवा गुवा परमल आम्हार साम म्हा हुयवा जाग्यो । जाग रा वाक 7, 8 क म दुयग्या । ज कदाम किर वन 20 30 राकजा सान रागन नद लवया गा प ला कर कोनी मिनता ज मिन ज्वावता ता माग पड तर पिळ म्भ वरवा वन काना 2 4 तिका पछ आपल लव थार ।

मगळा न पिछाण सिया । मरीर सू तो कपटो वरी हुयग्यो जर मुड्ठ स्यू अ न ।
 आडा त्तिन मिणस री परीक्षा लवण सारू आव । कां हू हार मान जास्यू ?
 ती । अे बीया रा त्तिन आज नी तो बाल बट ष्यागी । ज हू हार मान लेस्यू
 तो ओ ससार मन आगळ्या माथ उठाय दगो । हू पगा सू लाचार हू । पण मन
 स्यू नी । भगवान मन दाय हाथ त्ति्या है बुद्धि दी है । हू मतत मघप पर स्यू ।
 पण मिनरा वणन जीवण री जतन कर स्यू । हाथा सू म्हारा भाग बत्तन
 रा जतन करस्यू ।

आ सोचता मोचता कणा जगू न मीठी नीळ आयगी पतो ही वानी
 चाया ।

लैम्प-पोस्ट

ने फालतू समय काटण सारू का आ कय देवो के सिझया पडिया पछ, तपस दम पोतू घुडमाळ माथ जीव घबरावे बी सू उव न मडक माथ खुण वन लाग्योडी वती र नीच आय ने खडियो हुय ज्याळ। जठ ताई पडियो र ऊ के पग धरन पणिहारो ती गावा लाग ज्याव अर आरया नीद र भोट सू मींचाज वा ना लाग ज्याव।

म्हार वन थोडी दूर माथ डासा वणावण आळो मराठी खडिया रव। मादा, ममालादार कई भात रा डोसा वणाव। वणाय वणाय न एक र माथ एक राखनो ज्याव। डासा वणावता ज्याव अर च्यारू मेर देखतो भी ज्याव। जचाण चक कठ ही मामू आयन पकट नी लेव बीरो आख्या रा कोया अर हाथ री आगत्या एक माग ही नाचती रव। गाटूक आब अर माता ममाल रा डोसा याव कणा कणा ही ता अतो बगत ही कोनी मिल क संगळान एक माग डोसा त्रिया जाय मर। कया न घोची ताळ मुस्ताणू पड।

मडक माथ मोटरा फरति स आवती जावती रर। मात्रा माथ वेंठा मिनत्रा न मरण री फुरमत कोना। ज रतास मौन साम आयन पूछता पडूतर आ ही मिल क फर आजो अवार तो फुरमत कोनी। पण वा जाव जणा कित ही पूछ कोना क कि है ही बगत है क कोरी।

हाथ गाड धरना यावता चाल। गाटाआळा एक र पछ बीजा पग ठावा रात राख न उठाव गाडा खीचता जाग चार अर लिनाड माथे आयोड पमीन न फालतू चीज त्रिया उपक्षा सू घाती माथ पक अर आग चालता जाय। व बाट गण इहा मालम पत्र क र डग भगावता धरती व ठावी राख। पण बारी आ महनत पट सू भारी अर सत्तू र सुवाद व जीवन सू मूगा पड। आ मिनत्र दाया र बीच डग मारतो चाल। नी चालता क कर। वा भूला मर वा कुओ पागी कर। वा चालता रव अर पत्र रा मात्र चुनावता रव।

मडक र खुण माथ मनूस पाली गी कचरा गाडा गढी रर। रात दिन बी माथ माथ्या भिण भिणावती रव। कई मगता जवा भूवसा भयकर नाग

याद माय बारी नाख्या हाथ माय लोहे रो वाटा लिया आव अर भूखे भेडिये सा कचर गाडी न दख अर काटे सू कचर न बिखेर आपर काम री चीज बोरी माय घालन परमहंस ता जाग वीर पड । दिनग सिद्ध्या र सत्तू रा जुगाड करण सारू आख दिन कचरा गाणी न टटोळता रव । आ मिनग्या र डील मू एक न्यो भभको उठ जक मू कचरो आपरो नाक ढक लेव ।

म्हारो मन आन देख देखन ही घबराम ज्याव । ध्यान बटावण सारू हू थोडी दूर वठयड सीग चिणा आळ बन जायन दस पिस्मा रा सीग चिळा ल ऊ । एक एक दोम न्ये चिणा खावता र ऊ । छाती माथ आयोड भार न तो क्रिया ही सिरकावणू पड । होळ हाळ आर मिरकता जाव जोर बत्ती रो च्यानणू ऊजलो हूवता जाव । बत्ती रो च्यानणू उतो मचनण हूव क मुट माथ लाग्योडो पाउडर दीप नीप करवा लाग जाव । गौरी तो गौरी नीम पण बाळी भी गौरी दीखवा लाग जाव । भळको मारवा लाग जाव ।

तस एक पावडा दूर सारू बावा रा मीनर हा । मिनख लुगाईं टावर सगळा दरसन करन आव । वणा ही भीड बट वणा ही छोड रेव । जो ताता पौर एक रात गया तक रेव । मींदर र सार एक गळी है । जकी माथ मू लुगाया खाती खाती जाव सडक र दा या कानी देम । जाण पिचाण रो नी दीख तो सीग चिणा वचण आळ बन आय खणी हूय जाव । आपरो नम्बर याट दिरावण रो जस्तन कर । सीग चिणा वचण आळा मिनख घणू स्याण है । वीरी आगल्या की कर जर आग्या की कव ।

ग्राहक आया क कोना का आर गया का पाछा आवण आळा है । कती ही बाता एक साम केव । वी री मन व ही समभ दूमर र तो पल्ल ही नी पड । सगळा वीन घेर न गडी हूय जाव । चीणा लय । एक एक टाणू मीधो ही जाड नीध जाव हाटा री ताली र अडे ही कानी । मारली जाट भी ताकती रय क चीण रा सुवाद क्स्योक है । हाठ तो आपम माय मिल नी कोनी । कठ ही खाली बिखर नी जाय । अत न टकती जाय न रक । मिलनमार झट चाणा मनी बग भाव घाल न फाटक कानी चाल पड । होळ सीक माटर रो फाटन मुल जा पग धरती पाछी चाल पड । थोडी ताळ आ ही क्रम चाल । कई आव जर कई जाव । कई जण्या रा वादा पूरा हूव जर कदया रा ताटा अधर माय खूलता रव । व हार न पाछी नूड जग्या टट वा न जाव । जो ससार है । दण लण वादा खिलापी र्हा ही चातती रेव । एक आवश्यकता रो वाता है । दुजी जग्या पूर्ति रो नाम खिलाफी है । ससार रा जज्ञट जो ईना ही चानसी । ई माय की परव कानी पन ।

घड़ी टाय एक आ आग मोचणी रो खेल चानतो रव । हू मूक दमक सा ई सगळ नाटक न देखतो रू । निजर मिल । होग माथ हलकी मुस्वान फेन । नूई खिनाडी निजर नीची कर न व । जे अठ नी पडिया रेन तो क करू छाती मायनो नामूर ता रात दिन कुळना ही रव ।

मोटरा पाछी जावा लाग जाव । ठर कर अघार माय ही । फाटक खुल एक पग बार आव सगळा डील मोटर कानी झुक । एक बडी नूठ अर कर । अठ देवण साह तो राम जी रो नाव हुव पण नाटक ता पूरा ही रच । मोटर फराट मू भाग जाव । पगा सू ईहा मालम पत्र के सत ही कोनी है चूस्योची बडरी मी चाल । मनीवग रो पट भारी मो लाग घीगाण टूम्याडा नोट आपर भागन रोव । पण दूसरे र भागने वणाव भी । ओ घ घा वंहा चालमी चालतो रमी अर चालतो रया है । की फरक कोनी पटियो है । फरक मिरक मना रो पटियो है वा वात रो ।

रान वणती जाव । सत्रक ग्वाली टुमवा लाग जाव । सीग चीणा आळा डासा मणावण जालो जवण रो घारी माय लाग जाव । कुली मजदूर घाटी जाप आपरा तपत्र नयन आयवा लाग जाव । फुटपाथ न सत्रक न बुहार । इग मालम पत्र कर घरती न रग महन ममथ न मोवण रो घारी कर । तिन माय जकी मडक माटरा र भार मू टूटता ही वाही रात न मजदूरा न घाटया न कुत्या न रात वामा देवण मारू त्यारा करवा लागगी है ।

जे मिनग्य थ मिनथ जिनावर मडक रो ही विभाजन करन राक्या है । थू मामा थू मामा री जभ्या मान न तपड विछाव । काम सू टूटयोडा मिनग्य पडता ही नीट ल वा लाग जाव । भाग री विडम्बना भी कती टेती है । काई नीट लवणू चाव पण वीन नीट कोनी आव अर कोर् नीट रा मारया मडक माथ ही पत्र जाव । आ सगळा जीवण है रोजी न देखू अर देग दखन समझण रा जतन करू पण म्हार पत्ले की कोनी पड । हार न ममाजवाती ममाज र विभाजन न स्वीकार करू अर मी ग्रेट र होटल माय जायन आडर देऊ । सिगळ चाव अर दा पाव । आ विभाजन भगवान रो है क मिनग्य रा है । की कोनी ममझ पाया । पण अत्ता जरूर समझ पायो हू क मिनथ जिनावर माय फरक है । माठ पत्रा रा हत्या हूय जाव अर मन माय डिनर रा स्वाद लयन चाळ कानी चान पत्र ।

गोला वन आयन ताळा खानन वारणू गोलू । लटू जग ऊँ । च्यानणू वता ई तिनचट्टा चमगूगा हूयन एक साग भागम भागम सरू कर । मूण माय जायन डग जमाय नव । वपरा खानन पछियो बाधू । मत्रकी माय मू नोणे

छलन पाणी पीऊ । माचे माथ वटन वाया ताही सुख दुख गार भागू । म्हारी गत ता आन भोगता भोगता गतहीन हूयगी । खेनी त्वार करन दांत सार राखू । खूण माय एक आध गीक थूकू । सट्टू बुभायन माचे माथ मोवण रो जतन करू । म्हारी गोळी म्हारी भूत अर भविष्य दाही अ धार गुप है । ह ई अघर माय एक भूत सो पडिया मोचू जीवण अर जीवण रो मोल । आ सोचता मोचता आन्या नीं माय गळीजवा लाग जाव ।

मौत री दस्तक-अमूजतो जीव

विस्वास कोनी'

आ बात कानी । अनुभव री है

ता अनुभव आ ही प्रताप क

आ हू कठ कहू ओतो म्हारा विस्वास है । आ बात ता छाटीमी है पण टन अता तूळ क्यू दखा हो । धान ठाहू म्हारो जीव घबराव । धाक लार आया पछ नी ता ताता खायो जर राता ओन्चो । आखा जि दगी लडता ही रया । काम किया तो क्यू अर नी कियो ता क्यू नी ? सगळी जि त्गणी यू ही मुन्तगी । भाग फटयोच राडा रडवा मान सुवाई हुयता रया । मन जीवती न ही खायली । जणा म्हारी उठण बठण री मरणा कोनी री सगळा मंग हुयन लक्षण मारू आयग्या । कठही हू मोर साम मर नी ज्याऊ ।

तू ता उरटी पड है आ कठ केव ह

'आ नी तो पछ क केवा हो

काळवल प्रजी । मिनव चुप हुयन दरवाज कानी आया । सठान खडिया दखन मुन्त माथ मुन्तानरी रेखावा लीडाई । चिन्तनी खालन कमर रो वारणू खालियो । घर धिराणी रा हाठ चाल पूछघा । सगळी बीमारी माडर बताड । किर किर वन मू दवाई पाणी तिरायजी अर अवार कि की दवाई चाल है । मठ घणी चिन्ता प्रकट करी । तफलाफ रा दिन है । भगवान रा भरोसा राखो ऐ भी निकळ ज्यामी । रामरमी कर पाछा पधारग्या ।

मिनव क कर । नाक राखण मारू समाज मू डर जीवन वास्ते रात निन बल दाई पच पच मर । घर रो हस्तवो राख अर काळछा थोथो कर । लुगाई मू लडता अन्धोम पन्धोम माय मानखा जाव । समभाव किन अठतो अकल मूनड रो रिस्तो ही कोनी । सगळा बात त्पन चख चख मू गिण्डो छुडाय न चुप न्य ज्याव । छातीरा घमीण छाती माय ही लेवता रव । इस्या हा जुगर्बिहत्री पण वारी घरआळी वारी वाई वान मुण ही कोनी । ज कदाम भूत मू वीन जणू जावण रा केव देव ता वा आचणू त्नी ज्यामी । तुनिया तारी

दख न जुमलसिंहली समभावणू व द कर त्रिया अर गृहस्थ री गाडी राम भराम छोड दी । हूवणू है जना हुयसी ।

जुगलसिंहजी री घरआळी स्याणी ता कही त्राय मक् पण गूगी कोनी ही । काठीजती क पिस्यो छत्राम हुयन हाथ गू निकळ । पाली दती क दाय मिनट रामराम करयान मगत न रोटी दय दव । आ कक्षा जाय सक क लारला तिन तकलीफ मू गुजरया अर बुटापा माय रामजी री किरपाहूयगी ई कारण दो या रा घन मू घणू मोह हूयग्यो हा । दाया री स्याणप ही लडाई रो मूळ कारण हो । रामजी राजी हुया पत्र घरधिराणीरो गरीर साथ कोनी त्रियो । ज्यू ज्यू घन बट्वा लाग्या वा घणी वामार रवण लागगी ही । भागरा खल अजय है । मिनख धार वसार म चाल । पत्री ता आस व धी कोनी अर जद पट खुलवा लाग्यो तो पाछा थ द हूवणू रो नाम ही नी लव । पचासी ताही सात मुवाई टावर हूवता रया । चार गधर ही त्रिया बाकी ग पाछा हूयग्या ।

जुगलसिंह जी घणा ही स्याणा हा । 5 6 ताही छारिया पडी वान मरटाय नीनी । छोरार दसवा हूवतानी परणाय दियो । वाम घ घ लगाय दिया । छारया आपर मामर चत्री मइ । टावर आप आप री लुगाया न लेय गया । दायू जणा स्याणा हा आपवन अलवत कोनी राखी । लम्बे चौड मकान माय व नू व ती दाय जणा रवता ।

गरचो न वरचा । त्राय पकावता दाय खावता । वासी रव न कुत्ता खाय ।

वरस गुजरता गया । दायू जणा रान दिन लडता रवता अर वगत गवाता रया । जुगलसिंहजी रा रूतवो वढतो जाव हो अर घर माय लाग्याडी बीमारी ठीक हुवण रा नाम कोनी लेव ही । दूर रवण मू टात्ररा रा नह दूटता जाव हो । वरसा ताणी आपर पोता पीती रा मु डा ही कानी देव पावता । हारी बीमारी माय कणाहा किन कणा ही किन तार दय न बुलावता । दा च्याग दिन रवता । कामरो नाम लयने पाळा चल्या जावता । लार रवतो वडा सारा मकान डाकरो डाकरी अर अ तहीन लडाई ।

गकरी लारल कई वरसा मू बीमार चानही । लम्बी बीमारी चिडचिडो मुभाव अर थम भली भली लुगाया रा विस्वाम डिगाय देव । ज कणही जुगलसिंहजी डोकरी मू ना बोलना ता अगडा हूवतो अर घणा बोलता तो अगडो हूवता । डाकरी र त्रिल माय वम वरगियो क जुगलसिंहजी रा मन म्हार माथ कोना । आजकल म्हार माथ मन कोनी चान । घणी

वान करता ता क्वती आय जीवन एक ही बात है। अर कि सूने ही कोनी।
वीमारी सू डाकरी सूखती जावही।

डाकरी वीमार ही पण धन रा माह बुटाप माय घणू हूयग्या हा।
उठण वठण री सरदा कानी ही पण डाकरी आम्ही रात रोवडा सभालती
रवती। दिन माय जुगलसिंह मू मिलण भिटण साए आवना लागारी बात
सुणती। वम रं कारण नी रात न नीट न त्तिन माय। दिनग री सायोडा
सिझ्या ताइ याद कानी रवता पण बरसा पली री बात धिया री प्रिया सुणाय
दवती क करिया जाव मनता घणू ही साचा हा पर सरीर साथ कानी दव हा।

ळाम्ही वीमारी माय डील सगला टूटग्या। माचा भाल लिया। बटा-
वटू सगळा भळा हूयग्या। रात दिन डाकरी री सवा माय टाभोडा रवता।
अडास पत्रोस री लुगाया मिलण भीटण न दरमण करण न आवती रवती।
रामनमरी वाता हूवती पण डाकरी रा मन तो घर माय लाग्याडो रवतो।
हालत विगडवा लागगी। चत्ता कम रवा लागग्या। लुगाया माय घूमर फुमर
हूवती रवती। ध्यान राणीजणू सरू हूयग्यो क कठही प्राण माच माथ नी
निसर ज्याव।

डाकरी सगळा रा भाव समयती। पण चावती कि हू अबार कानी
मरू। म्हार मरिया पछ थारा घर कुण सभालसी। घररी नीग कुण रातमी।
पण ए सगळा वाता बोल कौनी सक हा।

मरतो मिनत अतरमुखी हूवतो जाव। आ बात ही डाकरी र साग
हूयवा लागगी। जापर सरला दिना माय घूमवा लागगी।

भात बरसा पली नाना सी बीनणा बणन इ घर माय आइ। गुडा गुडी
मा दो यू लागता हा। दायू जणा नडता रवता। कई बरसा रा बीच माय
अंतराल पडग्या हो। मुक्लावा हूया जणा माटयार लुगाई री रिस्तो समय
माय आया। मसार र अनुभव र माग नूवा नूवा अनुभव भी हूयवा लागग्या।
ए नूवा अनुभव आपर पुराण रिस्त न मुलाय दिया। माह माया माय फमवा
लागगी। नीकरी र कारण सहर माय आवणू पडियो। किराय रा छाटासा
भवान लेयन रवणू सरू करिया।

फमवाडा फरण रा जतन करिया। फरीज्या काना। माच वन बठी लुगाया
हाथ रो मारो दयन फमवाडा फराय दिया। अघमुली आस्या माय मौन री
धिया घूमती लागी मुन्डा खोलियो। हाथ रा दमारो करिया। बरफरा टुकडा
दोरीज्यो कठ गीला हूयग्या।

पाश्र्वाचारलौ बाता लखवा लागगी । वरम किता छाटा हुयग्या अर मरण रा पल किता लाम्बा ।

अडीकता अडाकता आस बधी । पछ ता साल सुवाई पट मडता गया । सगला टावर जिया कोनी । ताय छारा अर दाय छारी । टावरा र भाग मू आय भी बधवा लागगी । नूवो मवान बणाया । आ सगळी वाता साग माटयार माथ वम घणू हूयवा लागग्या । वम र वारण चौकसी घणी हुयगा । ई कारण ही माली पडिया रवता घणू मकान किराय माथ वाना जिया । आपरी हरारत अर माटयार री फिरण री आदत मू वम रात दिन बढता ही जावता हो । ओही लडाक रा मूज हा पण वन डाकरी टावर ज्यू पाळता जाव हा । कणम रात न बतलावण हुयज्यावती तो आगला 2-3 दिन सोरा बटता । नी ता भाड बिगाटा हूवता ।

च र माय हरारत आयगा । होठ हिलाया । बरफ री ढळी हाटा सू लगाई । लुगाया चौकस हुयगा । प्राण मुठ माय मू ज्यासी । हाथ सू इसारो करियो । तुलसी गगाजल चमच मू जिया । डाकरो हाथ सू इसारा करियो । जुगलसिंहजा न बुलाया । मगली लुगाया वार आयगी । पाणी सू भरीज्योडी आस्था लिया जुगलसिंहजी आया । गळ माय वाथ घालती बालण रा जतन करियो । अज आपरो कुण उपरला सांस उपर रयग्या अर नीचला सांस नीचे । पर माय कुहराम मचग्या है मावडी है ।

बटवारो

डा सम्पत्तगय अस्पताल सू आवण र पछ चाय लय नै सहर माय सठ साहुकारा, गरीब, मिलण भौण भाळा र घर गायन बीमारा न देखता । वामार र घर आळा माय सू कोई फीस दय दवतो लय नवता जर हाथ जोड दवता तो आग टुर पडता । फीस लयन बढई गिणता नो । दस बीस जता ही दवता बी माय सतास कर लवता । व जापरा घरम बीमार न ठाक माय ही मानता । लाग बवता— डाक्टर साहब जाप भोत भोळा हा । फीस पूरी माग न लिया करा ।’ डाक्टर साहब मुळवन उत्तर दवता— ‘आपरी सरण साहू सेवा कर दय फर माग न जतान बयू हराऊ । गळ रोटी भगवान देव । म्हारो काम बीमारा न निराग करण रो है ।’ रात न नव साठ नव बजी ताई डाक्टर साहब सहर माय रागी देखता रवता । पर घरा पूगन जेब ग्वाली करन घर धिराणी क समझाय दवता जर जाप जाराम करण खातर साफ माथ बठ ज्यावता । सिनान करन पूजा पाठ करता अर पछ भाजन करन छोरा साग घर धिराणी साग हुताई करता । लारल 20 25 बरसा मू डाक्टर साहब रो आ ही नम हो । घर रा सगळा भार घर धिराणी माथ नाख राख्यो हा । डाक्टर साहब र दाय छारा अर एक छोरी ही । सगळा रा ब्याव कर दिया हा । छोरा राज री चाकरी माय वा र रवता । छोरा आपर सातर ही ।

डाक्टर साहब री घर धिराणी स्याणी अर समझदार ही । हाथ री काठी हा । पण छारी न देवण माय पोली ही । सगळा र सामै हाथ र सार सू दवती पण छाने दवण माय हाथ खुलो राखती । वेटी मान घणा समभावती क तू ओल छान नी क्रिया कर । जनी बाण पडज्याव वा मरिया पछ ही छुट । डाक्टर साहब सदा ही समझावता क चारो कोई हाथ थोडो ही पकडे । तू थार मन चायो कर पण बटा—बहुवा न निषाय न कर ।’ छारा री आ ही राय ही । पण वा आपरा आन्त सू मजबूर ही । ई कारण दो यू बहुवा बात बणावती । बारा मतो हो क आप कन हा नी दय न म्हार कन सू दिराव ता घर री चोखी लाग अर म्हारो मान बढ । पण डाक्टर साहब री घर धिराणी गोमती सगळा री सुणन करती आपर मन री ही । रोजोन बवण सू चुप रवणू ही चाखो हो ।

हज़िरी दिवाली, वार त्योहार जनम दिन माथ सगळा भेळा हूवती। अबक डाक्टर साहब र जनम दिन माथ सगळा भेळा हुया। 5 6 दिन राजी खुसी मू गुजरिया। सगळा पाछा जावण री त्यारी कर हा। छोरी सगळा सू पती जावण आळी ही। एन माक माथ सुनार मान रा लड लय न आयो। छान देवण आळी लड सगळा री निजर माथ जायगी। बी वेळा ता सगळा चुप रया। पछ वात रा प्रतगड हूययो। डाक्टर माहब फर गोमतीन समभाई क तू थारी भात न नी छाड। छाटी सी वात ग्यतर बेन भाइया माथ क्यू बर घाल। आज आपा करा काल आन हो करणू है। तू देव तो थारो हाथ कुण पकड है।

‘थान की ठा ता काना तमक न गोमती बोली— घर चलावणू बडो मुश्कल है। छारी न क कोई सोन री तागडी बणाय दी? एक लड बणाय दी जक खातर तुळ मघाय दिया। घर रचें माथ स वचाण न बणाई है। लारल टा तीन बरमा सू छोरी लड खातर केव ही।

मन कय दवती हू वणाय दवतो डाक्टर साहब बोल्या।

थान की ठा तो पड है। वणार् आप र राज माथ? जो म्हारो बाप हा जको थारा सगळा टाणा मलटाय दिया। नी तो थान टा पड ज्यावता गामती बोली।

थार अर म्हार मायता माथ क फरक है वात पराटता डाक्टर साहब बोल्या—गामती न राजी रावण खातर छोरा माथ धाडी रीस करी जर बाल्या— था लोगा रा हालताई टावर पणू नी गयो। प ली बत्तावणू भूलगी हूसी। पछ बत्ताय दवती। की दियो तो थारी बेन न हा नियो है।

इट गोमती बोली— हू बी वेळा चेता चूक हूयगी। सुनार त्याया अर हू देय दी। पछ ता बत्ताय हा दवती। डाक्टर माहब री वात सगळा समभग्या। आप आपर काम माथ लागग्या। वात ठण्डी पडगी। डाक्टर साहब लाट्ट बुभाय न गाभो ओढ क सोयग्या। गोमती सायगा।

वरस निकळता रया। त्योहार आवता रया। साल सुहाइ जनम दिन आवता पण सगळा भेळा नी हूवता। कदई छारा जावता कदई बहूवा। एक दो दिन ठर न पाछा वेगा ही जावण री त्यारी करवा लाग ज्यावता। गोमती राजी रवती अर छोरा भी। न बहूवा रो डर रवतो अर नी छारा रो। डाक्टर साहब र मन माथ एक गरी उदामी रवती। मन मारन डाक्टर साहब ऊपर

स्यू हसता रवता, मुळक नै बात करता पण एक टास छाती न साळती रवनी ।
बात री बात च्यार पाच बरम गुजरग्या ।

डॉक्टर साहब माय घाडी घकान आबा लागगी ही । घरा आया पछ
डाक्टर साहब बार नी जावता । नित नेम करन हळको लागू थायन थोडा
घुमता अर बेग ही साय ज्यावता । हुताई करती गोमती उडीक ही कणा
नीकराणी जाव अर हू मोडा ढकू । नीकराणी हेलो दिया । गोमती श्ट मोडो
ढकन लाइटा बुभाय न सोयगी ।

घकगी क' डाक्टर साहब पूछचा ।

का तो । पण जीव सारा कानी । छोरी रा सुआड हुयान दो मीना
हुयग्या । की सभाचार कोनी । खावण पीवण माय भाडी है । आप केवो तो हू
5 7 दिना माय जायन सभाळ आऊ । गोमती कन सिरकती बोली ।

डाक्टर साहब जाण हा क जावण री त्यारी ता प ला मू ही है । पूछण
रा तो नाव है । हा डॉक्टर साहब बोल्या— छोरी री सभाळ हूय ज्यासी
अर जावती वेळा बीनणी न सभाळ लीज्य । अक्क बोळा दिन हूयग्या तू कठ
ही बार गई नी । पारो मन भी हळको हूय ज्यासी ।

'आपन राटी पाणी रा फाडा पडसी ।

'नीकराणा खाणू वणाय दमी । थोडा दूध अर फळ माथ जार
राखस्यू ।'

'ता पछ काल परस्यू जाय जाऊ

हा । मिल आ ।'

डाक्टर साहब सगळी बात जाण हा । बीटा वा घ्योडो है ना करण सू
की फायने ना ।

सगळी भाळावण दयन गोमता दूज दिन बीर हूयगा ।

डाक्टर साहब न सगळी बाता री जाणकारी हा । क कवरसा कमावण
माय माठा है । गोमती भी इण बात मू परिवित ही पण डॉक्टर साहब न नी
कवणू चाव ही । छोरी मद कमाऊ री लुगाई ही पण अक्क माय रावण री
बडी बन ही । आपरो ठरसा सगळा माय राखणू चाव ही । गोमती छोरा रा
अक्कडाई माय सा रो दवती अर छान दयन कवरसा रो घाटा पूरा करणू
चावती । पार ता निजरी कमाई सू पड मासर र नियोड मू ना । राड रो
कारण अक्कडाई है । लुळतो मिनव सगळा रो ही भायना हूव ।

डाक्टर साहब रा 5 7 दिन दारा सोरा निकळ्या । आग त्तिन सुप्त हूय काळ त्रिया । तो तीन वार तार दवण री साची पर विचार छोड त्रियो । मन माय सोची क त्रियत इमी गराव तो कानी है डील माय हरारत है । एक दोय त्तिन आराम करस्या ता ठीक हूय नास्या । सिङ्ग्या नीकरानी दूध देयन गई जठ तार् वार्द ग्यात चात नी हा । डाक्टर साहब मोडो डकन दवाई लेयन सोयगा । आधी रात पछ डाक्टर साहब रो हाट फेल हूयग्यो सूता रा सूता रयग्या । त्तिनग नीकरानी आयन घटा बजाई । घटी रा आवाज पर माय मूजता री । पडूतर ना आयो । नीकरानी आडोसी पाडासी न भेळा करिया । घणा हा हुता पाडिया मोडो पडवडायो पण पत्तूतर नी आयो । जणा लोणां माय धम बडग्या । हुत रा गगळा सिरी अर अणतूत रा एक ही सीरी नी हूव । था साचन कोटवाली माय खबर दी । घटी एक माय पुलिम आयगी । पुलिस चुळियो ताड क घर माय घुसी । डॉक्टर साहब मरिया पडिया हा । अस्पताल सू डाक्टर बुलायो । चक अप करन हाट फेल सू मरणू वतायो । गुवाड रा लोग भेळा हूयन दरफ री सिला माथ साम न राखी । तार दिया टेलीफोन करिया । आरौ दिन दु स माय निवलयो । रात पडता र साम साम छोरा पूगग्या ।

आधी रात पछ छारी आपरी मा अर कवरमा र साग पूगगी । थोडी ताळ रावा बूका हूया । पछ छोरी वापरी सम्पति माय आपरो हूव जताया । कवरसा की दय लयन समझोतो करण रा सलाह दा । मा रो शकाव छारो कानी हा । छारी सलाह की क च्यार पाता करली जाव । मा म्हार बन रमा इण वास्त जाधा हिंसा म्हार नाव कर त्रियो जाव वाकी रा दा या भादया न दय दिया जाय । बात रा प्रतगड हूयग्यो । कोई शुक्ण न त्यार नी ।

सगला छारा न समभाई पण शुक्ण त्यार नी हुइ । छारा री मनसा ही दाह क्रिया ग काम कर त्रियो जाव पछ सगळी राड सळ्णाय नी जाव । घन रो लालच रिस्ता भूल जाव । आगली पाछली दाखणी व द हुय जाव । राणा राण भेळा हूयग्या । बात वणती नी दखन स्याणा री सलाह सू पुलिस बुलाय न पास खाम कमरा माथ ताळा जडाव दिया । रसाईधर अर समानधर खुला रायया । त्तिनग डाक्टर साहब रो पोस्ट मारटम रो दस्तूर सा त्रियो अर रिपाट वणायन दे नी । सिङ्ग्या पण र साग साग डाक्टर साहब रो दाह क्रिया हूयगी ।

डाक्टर साहब रा ग्यास भायला वकील जाधपुर हाईकोट माय पमी सारू ग्याडा हो । डाक्टर साहब री मौत रा समाचार रेडियो माथ सुणन रात

न ही खाना हूय न पाछो आयग्या । पौर एक दिन चढघा पछ डाक्टर साहब र घर गया । मातमपुरी कर । सगळा आपरी बात बताई । वकील साहब चुपचाप सुणता रया । गुवाड रा मिनख भेळा हुयन वकील सू अरज करी क सगळो निपटारा राजी खुसी कराय देव, तो चोखो रसी । वकील साहब पस कार न भेजन थानेदार साहब न चाबी लयन बुलाय लिया । सगळा ने भेळा करन बठाय लिया । थानेदार कानी देखता वकील साहब बोल्या—जाप सगळा ताळा खाल देवा । डाक्टर साहब मरण र प'ली आपरी सम्पत्ति रो बटवारो करग्या है । येल माय लिफाफो वाढन रजिस्ट्री खोलन छोरी अर कवरसा कानी देखन बाल्या थे डाक्टर साहब री सम्पत्ति माय हक करणू चाव हो पण थार अती ही अरणा नी ही क मन अडीक लवता । थ थार मायत री जती दूर गति करी है वती कोई दुस्मण भी नी कर ।

कवरसा अर छोरी रा मु डा फक हुयग्या ।

दुखवा कामू कहियो न जाय

दिनूग रा बखत हा । जज साहब पण लितण र कमर माय बठा लार ता तीन च्यार दिना माय आयोडी शर न देव-हा । हा मिय माय नाना नाट लगाय अनिशियल करन तारीख लगाव हा । माय ऊपर पया चाट हो । टयूव लाइट चम ही । छोटा लाम्बा एक पेज रा अर दा च्यार पज रा भात भात रा सरकारी कागज निरळता जाव हा अर जज साहब री निजर जरूरी जरूरी बाता माय फिरती जाव ही अर बी क साग हा आगल्या अगूठ माय दयोडी लाल पिसल निसाण लगावती जाव ही । डाक र पठ र साग कई निजू कागज भी निरळता जाव हा । समय भागतो जाव हो पण डाक रो पठ ता खाली हवण रो नाम ही कोनी लेव हा । कचडी रा वगत सामे भागतो जाव हा । आज र मुकदमा रा तारीखा मिसला माय मू मू डा वाढन झाव ही । कई मुकदमा रा आज फमला सुणावणा हा । व भी भाक-झाक न आपर भाग रा निणय लिपण रा तनाटा करता जाव हा । जीव अकलो पण हा जोरयू घणा हो । अे सगळी समस्यावा माय जज साहब रास्तो काढता जाव हा । निजू कागज जणा ही आवता जज साहब रा मुण्डा मिल जावता । कई कागजा न देवता ही मुड रा भाव अपक्षा मू भरीज जावता पण स्याणा आत्मा परा खोटी सगळी बाता न पीवतो अर वगत रो तकादो मान न सगळा जरूरा काम निपटावतो रव । लिलाड माय पसीन री हल्की हल्की बूदा आ गई हा । वार वार जज साहब बारी माय मू आवत तावड र चिलक न देवता हा । काल री बिरवा र कारण आज तावड माय गरमा थोडी ही पण अमूजा घणू हो । थोडा सा कागज रिया जणा एक मली सी ग्याम आपर नाम री थोडे भणिय मिनख र हाथ मू ठिकाणो करयोडी मिली । जज साहब ई खाम न दो तीन वार उलट पलट न देखी अर जाणणू चाया क जा ग्याम भेजण आळो कुण है पण ऊपर मू लेखण मू की पता कोनी चाले हो क इणन भेजण आळो कुण है । हारन ग्याम रा खूणो फाडयो अर कागज बाटियो । वा र मधरी चालती पून रो शोको कणा-कणा ही आव हो फर आवण आळी बिरला री बात बताव हो । अमूजा बघती ही जाय हा । चढत सूरज रो तावटा पून माय हो । जज साहब रा कान कमर र वारण कानी हा । पसकार र जावण रा बखत हा ।

डाक रा कागजहानताई सलटया कोनी हा ।

। साम माय मू कागद काढ न सीधो करियो । कागद लम्बो हो । पढण रो पूरा वगत कोनी हो । इण वास्त इ कागद न मिसला र वस्त कानी राख न दूसरा कागद देववा लागया । पमकार री उडीक घणी ही पण वो हालताई आयो कोनी हो । लिलाड माथ तीन तीन सळ एक साग ही आव टा पण थोडी ताळ पछ व सगळा पाळा मित्रता जाव हा । कारण पेसकार काल ही जज साहव र माग दौर मू आयो है । थोडो भात घर रो काम करन अठ कामी । पमकार निरोक्षण री रिपोर्ट बणामी, हाइकोट रा रिटन तयार करमी । आज री तारीख री मिमला मभाल सी । कन्धी गया पछ बोन तो माया ही उठावण री फुरसत कानी मिलमी । वकील मुवकिल सगळा घेर लसी । पाणी पीवण रो वस्त भी कोनी रमी । दस्तम्ता री मिसला अठ भजसी कई मिसला सलटाण सारू घर ल जासी अर दिनुग वान ओठी भजमी । घाणी र वन दाई रात दिन मरतो रमी । आ सोच र जज साहव र तिलाड रा सळ पाळा हुव हा । डाक रा सगळा कागद सलटाय न जज साहव बी कागद न पण साह उठायो । पण साह करिया —

श्रीमान जी

हाय जोडन अरज करू । म्हारो नाम किसनी है । साकिन रणी, हाल बीकानेर । आज बोळा वरसा पली जणा तीन गाल एक साथ ही काळ पडियो म्हारा व्याव किमन र साग हुयो हा । जद हू टावर ही । वाळपणा रा दिन भागता लोडता गुजर गया । जणा हूँ दूषडिया उठावण जोग हुई म्हारो मुक्तावा हुयो । मुक्तावा र घोरा त्तिना पत्र सामुजी न तानी खायमा । घणा ही थाडा करिया पण व ता सूना जवा प्या सूना क फर उठया ही कानी । पय दोय काळ एक माग । मात ता भगवान री नियोडी आव पण वणा वणा ही कुमौत भी आय जाव । मौत तो जीवण रो झडट ही मिटाव, पण कुमौत तो कुळरा नाम ही डूवाय देव । सामुजी र आसर रा कर्जो उपर मू काळ, कुमौत माही हा । गठा रा तगादा अर राज रा बीगही जीवणू हा दूभर कर नियो । मसार व वत एक माग ही तारळी दयया । एमान रा तगापो सगळा मू बढर हा ।

हूँ आ सगली तकतीवान भागती जीव ही । मिय र त्तिना माय ही म्हारा पग भारी दूयया । मुआड वरण न पीहर आई । छाल रोती खाय न तिन निहाळ ही । भगवान न पता मुग भी मजूर कोनी हो । गाव माय छाती मा बात मयन राह हई । ममार माग हाकी माया कानी करू । पण तो

फायदो उठाय न वारा नाम लिखाय दिया । ज'र खावण न ही बन छत्राम कोनी ही । राज काज रो खर्चो कठ सू भुगत्यो जाव । लय दयन सगळा एको करन बाने फसाय दियो । 302 माय वान 15 साल री सजा हुयगी । म्हारो जनम बोला नयता माय हुयो हो । पण बोला नयत आपरो परभाव लिखासी उण सू पली ही खोटी साजसती लागगी । तन रो वपडो बरी हुयग्या अर अन्न रो दाता सू वर हुयग्यो । गोधा री लडाई माय घूटा रो नास हुयग्यो मिनय यवा हू राठ जिमी हुयगी । म्है आ वर ही बानी सोची ही क मन मोटयार जीवता थका रहापा भोगणू पडसी । वयत कर जिमी बरी कोनी कर । ओ विधाता रो लक्ष हे जिको मन भोगण ही पडमी । मोटयार र जावताही गाव री गळी गळी म्हारी दुममण हुयगी । एक दिन रातोरात गाव छोडन म र री सरण ली । अब अठ गर माय सठा र गोबर पोठा उठाऊ अर दोरो सोरो दो वारो वेट भरू । वेट कितोरो पापी है जिका न तो कद ही भरीज अर न भरियो जाय सक ।

पाछन दिना न यात् कर-कर न राऊ अर राय रोय न ता मरियो कोनी जाय सक । मरण र पली ई डीकरी रा घरही वमाणो हे । हालताई म्हारो मन मरियो कोनी है । डाल रिम रिमन खोखळो हुवतो जाव पण भावना आमा र आधार साथ जीव है । पागर है । आपन के बताऊ जणा ही आम माय वादळ उमट है बिजळो झपका मार, म्हारा जीव आवळ वाकळ हुय जाव । मावणिय रा दिन वाद आय जाव । डीकरी बा रा जिया ही म्हार माय हाथ राखन साव । वो भी बयत हो जणा हू बारी छिया माय निघडक हुयन सोबती हो । फिरला री भोनी मोटी छाटा म्हार डोन माय एक मागही सौ सौ काम जगाय देव । रमण भरण री मन माय आवण लाग जाव । हू वगत री सतायोडी अर रोटी री मारियाडी हू । हू आपन के अरज कर आप धणा ही ममझणार हा । हालता- बारी आगत्या र आयटणा रा धाव म्हार हावल माय है । जणा कणा हा है आ कवती कि थ ईया काई करो हा । अ टूट ज्यासी । व मुळरुन उथळा दवता ज म्हारी वाद रा निसाण है । सिनान करती वला जणा डील माय हू हाथ फरू, अे धाव म्हारी आगळ्या सू बुचरीज जाव अर म्हारी आस्या मू एके माय ही सौ मौ चोमरा ववण लाग जाव ।

वान रो शत है । हू मठारा गाय गूजर बन दुआवण साहू खडी ही । गूजर गाय र यण धोय न गूणियो गोडा माय न्वाय न यणा माय हाथ धालबा लाग्यो जणा गाय कूदया लागगी । गूजर उठन गाय न घूम फिरन न्खी अर

बोली आता ह्या माय है। साड वन लजावणी पडसी। आ कयन याणो पाछो खोल लियो अर म्हार कानी दगन मुळकने कहुया कणा ही थे भी ह्या माय आवो हो कोनी ?

हू यूक गिटनी बोली अठ तो बीच रा तिन पाधरा करा हा। जक दिन पछ म्हारो मन इस्यो खराब हुयो क न रात न नीद आव अर तिन भाय चन। जणा कणा आम्न अपक तो ईया मालम पड क व मन गाडा नाच दवाय राखी है अर हू पमवाणो फरण रा जतन करु। अतन आग खुल जाय अर सफेरो भागीडा काळा जघकार खावण न दाड है। आपन क बताऊ। लुगाई रो बात लुगाई समझ है। पी-मा रो डाफर मन आगी रात ही कोनी सोवण देव। पुन र फरकार न वाजता किवाड भूत रो धम करावता रव।

श्रीमान जा आपन के सिलू। कपडा फाटचाडा है पण डील वी माय सू ही बिगरता दोस्त। चोमाम माय अकूरती ही हरी हुय जाव। मिनख रो बात ही क कवणी। जमानो ताजुफ है। म्हारी जखरत समाज रो आवश्यकता है। ज म्हारो पम उल्ला मीघो पड जाव तो आ म्हारा कसूर कोनी हुयलो। मन मा रा चाहिज। सा रो मारग सू भटकाय भा दव। हू घोवो कोनी देवणी चावू। म्हारी आस्था अर विश्वास डिगाणा कोनी चावू हू। एण वास्त आप मू अरज करू हू क म्हार माय याय कराता।

याय करण आळा भगवान रा रूप हूव

आपरी

किसनी

वेवा किमन रो

कागन र पुरो हताहो म्य रा टणवा लाग्या। जज साहब र विलाड माय भावारा भूळिया आवा नाग्या। पमकार रो मदेमो आयोडो हा क बीरो घर आली रो हालत खराब है दण वास्त आज वो कचडी आय कोनी मकना। जज साहब कागन माय पा पा लगाय न नीतिपन करिया। मगळी हाक न भळो करन क इडी पुगावण ग अरल्लान हुवम तिया।

अर वो दिन जज मात्र रा बयान लवण माय फमला लिखण माय पेसारी तारीमां खण माय अर तहमालारा रिपोट लिखण माय गूजर गयो। मिश्या बगळ पुग्या जणा वाळा घग्या हा। खावणा-खावणा करन घूमण न गया परा। तरोतात्रा हुयन धापी रात पत्रिया पछ पाछा आमा। पाछा

मिसला निवाळवा लागण्या । काम बरती बरता दम बज्रण लागगी । पाछी घवाण आवा लागगी ही । बारी मांय सू अंधार घुप दीग हा । घ्यान सू दळ्यो तो पतो चाल्या नि विरग्या वृषण आळी है । आभो वादळ मू भरिया हो । दूर दूर ताई त्रिजली भरवा मार हो । पून ठ र ठ र न चाल ही । घघाउडा आवा लागण्या हा । जज साहब पाछा काम सलटावण न बठग्या । जित किमनू बल हता मामरी मिसल साम आई । त्निग आळा मगळा समाचार आख्या भाग फिर बा लागण्या । जज साहब रा विचार पाछा शटवा गायन घुमवा लागण्या ।

काल री ही तो बात है ।

मरकारी गाडी पूगळ रात्र पार बरन सिविल लाइ स माय पूगी जणा रात री तव बजवा लागगी ही । छाटा छिडवा घोरी ताळ पली ही ज्यो हा । सगळी मडक पाणी मू भरी ही सडक गुनसान ही हा । जाण आघी रात हुयगी है । भूती भटकी एव तो कार परात्र सू निवळ जाव ही । घम्बारी लाट्टा भूत रो बेम बराव ही । बणा बणा ही गाडी रा चक्का छप छप कर हा । बगल आग गागी गडी दृयन हान दियो । गाडी र तार मू पेमकार उतरन फाटक गोलियो । मामे उगमते माय सट्टू चग हा । मोटर री आवाज गुणन जज साहब री घण कमर रो बारणू गोटन धार आई । मुघड छुगाई ही । बरस बोई 40 45 रो लाग ही । चात्र रो टमको जुवानी न ठोकर मार हो । नोकर न आवाज दवण त मु डो गोट हा जन न नोकर आयन गाडी मू सामान उतारवा लागयो ।

साहब मुसगायन उतरिया । वा आळमा र स्वर माय बोरी —

बोळो मोडो बरिया ।

विरग्या र बारण गाडी स्पीड कीनी पकडी

आ दस । हू साचे श्री क घोरा मोडो बगी जरूर हुय जवामी । सार सार चालती बोली ।

चाय तो वणाआ । साफ माय बठला जज साहब बाल्या ।

मात्र रो मगळा मामान कमर माय आयगयो । चाय रो ट्रे आई । घण वणाय न जज साहब न दो । पर आप वास्त वणावण लागगी । चाय री चुस्का लवता जज साहब बोल्या पमकार जो न ।

हा चाय व नामते रो कहियो पण बतो चाय ही ली । खाणो खायन

आया ही बताया, चाय पीवती जज साहब री धण बोनी । जज साहब बोल्या
 'तहसीनदार भगवानसिंह उडो स्याणा है । खातरी चोखी की । जापर वास्त
 धी रो पीपो खिनायो है ।

'हा ।' भाला हाथ किणन ही आवण ही कोनी देन । मन ही कातिमरो
 रो नूता दियो है । दो यू जणा होळ होळ चाय पीव हा । पगारी जावाज
 सुणन जज साहब वारण कानी देम्यो । पसकार न दखन बोल्या — जव
 डावो । बाल मित्र लिया । गाडी आपन घर ताई जोड देमी ।

पेसवार जी हुकारो भरने मुडग्या । बगल माय मू पाछी जावती गाडी
 रो हान सुणीज्यो । वायरूम कारी जावता जज साहब बोल्या—हू कपडा पळटा
 जाऊ । मम साहब उठन कीचन कानी जाय न दूध ठडा कर साहब र सोणे र
 पत्रग बन राग्यो बगले रा पाटका ढकण रा कह्यो । अन न जज साहब वाय
 रूम मू आयग्या । धण वाली ये चाला । दूध ठडो करन राग्या है । हुजत्रार
 आऊ हू । आ कवती वायरूम माय वरगी ।

जज साहब सोवण आळा कमर माय जाय न टेवुन उम्प जळावन दूध
 पीवन पत्रग माथ लेटग्या । अर सूता सूता लारउ जिना र अखबारा रा
 वागत्र पत्रवा लागग्या । पाना र साग नीद जायवा लागगी । जाधी घडी
 मुक्कल मू पीती हुमी । मम साहब कमर माय बडन पाटर तकियो । रात्रका
 सुणन जज साहब जाग्या । गाउन बन राखती बोली—म्हारो तो विरगा माय
 गळजा बठतो जाव हा—कन सिरकता साहब वाल्या जणा ही ता हू आ
 जाण न वेगी आयो हू । की अर टटाळता बोल्या । वा भेळी हुयवा लागगी ।
 जज साहब कन सिरकता जाव हा ।

मम साहब बोल्या—आज ईया उत्रास किया ? मभळता जज साहब
 जारया—'एक तेरा ममस्या है जकी रा मन कठ हो ममाधान काना दीव । हू
 रा वा कानी पाप रा भागी हू । जा बेयन सगळी वागद पत्र सुणाया । वार
 जार मू विरवा हूवा लागगी ही । पाणी रा परनाळा पडवा लागग्या । हाथ
 पकडन उठावती बोनी— हू तो की कोनी जाणू मन ता आज भी ईहा मानम
 पए कि म्हारा भ्याव तो बाल ही हुया है ।

गाडी ताळ ताह जज साहब घावान गाजता रिया । धण बोनी क
 प्योत्रा हा

घावा ३

व अठ कोनी है काळज माय है आकवती घण मोवण रो ननन करवा लागगी । पण जन माहब री आभ्या माय नीन् कठ । जणा ही सोवण रो जतन कर साम खडी लुगाई किरपा मागती दीख अर केव जज साहब । म्हारो भलो कीज्या जज साहब बडबडायन उठघा । आ काई 'याय है । जको रमान न रिमाय रिमाय न मार । घण हडजहाय न उटी अर बाळी काई के बो ?'

नीन् कोनी आव

अठीन आवो । नन मीचती बाळी— नीद आय ज्यामी ।

चाद चढ्यो गिगनार

सोचता माचतो महेंद्र कुर्सी मू उठ र कल्पना मू मिलण मारू टुरग्या । सूरज माथ पर चमक हा । राजती लू पटपडा पाड ही । डील सू चूवतो पमीना बुस्सट र लागण सूपता ही घूख हो । तावड सू आरधा मीचीज ही गुद्दी लाल हुव अर टाट बळ ही ।

महेंद्र रा पग काम रा गति मा खाधा म्वाथा उठता हा । डामर री सडक सूनी ही । भूल्या भटक्या ही कीड मित्र अर जिनावर सडक माथ दाख हो । घोळे दोपारा सडक माथ चालणू भोमर माथ चालण जडो हो । बळता लू माय मुरद न बाळण खातर ती लय जाव जणा मिनख धू कर बार जाव । तावड र कारण डामर पळपळ हा जक मू सडक लिच पिच करण लागगा ही जाण सडक रा हियो गरमास स पमीज हा । सडक धरती माता सू ठडक माग ही पण धरती खुदो खुद ठडक पावण सारु मगत री जिया गडका खाव ही । बा बापडी सडक न कठ मू ठडक देवती । इण कारण सडक रो हिया झुर हो ।

महेंद्र मन री गति सू आग वेध हा । लिचपिचा जग्या बीरा पग पकड ही । पाछा उठता जणा बीरी पगरखी सडक सू विपण रा जतन करता । इ भटक र साग महेंद्र र विचारा माथ सागीडी चोट नागती जर भळ सावचत हुयन आग चालतो । बा आपर ऊष पाधर विचारा माय मेरी रग्योडा हो पण बीरा पग टावी जग्या पासी ही जाव हा ।

पनवाडा न अठ पान खायन गडक माथ एक पीक थूक्या जाण आपरा अस्थिर विचार पीक साग सक् माथ नाख दिया है । जब माय मू रुमाल कादन पनवाडो री दुकान माय लाग्योड दपण माय आपरा मूडा दखन रुमा सूरगड न पूछपा । जाण सगळी मुस्ती न पूछ न म्वाय दी है । पीक थूक न भाग चाल पडिया ।

कल्पना र घर र वारण का पूग न कूग खर म्वाया । फर ध्यान आया क आज काई छुट्टी घाडी है जका न घर मिलसो । अ विचार आवता

मूंग है अर ना सरता। काम रा रिस्ता पट गू है। जब री मूठ जरत गंगा है। सामे माच बठी कल्पना रा मूठा घणा साफ दीगवा लागया। रणन जरत है म्हारी अर मन इण री। नोनुवा री जरत मिल र एन नूवा जरत न जलम देव। म्हा दाया रा ममार अळगा अळगा है अर विस्वास सगळा गू।

महेद्र र लिलाड माघ पसान रा वूदा झारवा नागनी। वान इहा मालम पडण लाग्या व उण रा सगळा विस्वास पसान रा वूदा साग ववण लागया है। घोडा आस्वस्त हूयन प्लट री सगळी चाय एक गुन्क र साग पीव न कप प्लट आळ माय राग्या। जेउ मू रुमाळ बाइन लिला र गड र गड न पूछधा। आपरा सगळा विचार साफ करणा चाव हो। विचारा र भनूळिय न साफ कर र महद्र आठा मू सूय माय एक चुम्बा लिया। कल्पना आ देखन सरमायगी महद्र री चेतना दीडया लागगी। र्छावा बळवती हूवती जाव ही। वो कल्पना न भीचणू चाव हा कसक भाचणी चाव हा जब मू सूयता एकाकार हूय जाव। उण री मासल डील टूट टूट न पडया लाग।

ढळतो तिन टावरा र आवण री सनसो दव हा। टावरा रा आवणा ही सूयता रा अ त हा। जब मू वा उतावळो हूय रया हा। मात्र रा कत्री महद्र री चेतना र काना माय खडगडी ज ही। महद्र उठ न भागणी चाव हो पण पग उतर देव हा जणा वा इणी भात पचिया र वणू चाव हा। हाठ सूय माय चुम्बन लयन चुप हा। हाय मना वायरा मा कुर्सी र हाथ माथ हा। चेतना रा साकार रूप कुर्सी माय पचिया हा। महद्र उठ न कल्पना कानी चाल्यो।

काना र पडद माघ ऐरण की सी चाट लागी। मोड रा कडी जार जोर मू खडखणीजी। कल्पना माडा गोवण ताई गई अर महद्र एक सूयता रा चाय लिया

काकाजा काकाजा र हाक मू सगळो घर गुजण लागया। महद्र नावण घर मायन मू डो घायन पाठी आयो। मूच माथ तण्णा री ग री छिया घूमे हा। एक जळन टिया मू ग रा हूवता जाव हो।

पाच वजण आळा ही। महद्र पाणा पी र प्रम कानी टुरग्या। दाफारा जकी सडक आदमी रा चरण घूमन ताई तरम ही वा जवार मीनखा मू मरा वार ही। मिनवा रा रळा कीडी नाळ दाई चान हा। कदास ज काई एक पल ठरणू चाव ता तार मू घडको देय न लाग बीन जाग टियाय दव। लाचार

हयन धक्को गायन आग वहीर दूय जाव । आ भीड भाग ही अहम् री भरि योडी । मीनखा री भीड जकी भूत र सा'र जीव, वनमान न झूठताव अर भविश्य र अघार माय की टटोळ । महेंद्र ई भीड माय अणमणा हूयोडो घक्का वावतो चाल हो । वीरो मन लार हो पण पग आग चा न हा । आख्या खुली ही पण दीन की कोनी हो । वो हर एक मिनख न जाणण रो त्तन कर हो । सगळा च रा अणजाण सा आख्या आग घूमै हा । माथो की काम नी कर हा । मूनो सो हो । ममीन री खडखडाट सुण न महेंद्र रा होस वावडियो क रा प्रेस पूगग्या है ।

होळ होळ सगळी प्रेस ग्याली हूयगी । महेंद्र एक ला टिल्ल सो वठया हो । टबुल माथ लण दण रा कागज पडिया हा । महेंद्र कामजा माय काळा आखर भागता दस हो । भागता भागता आवर कल्पना रो रूप घरती जाव हा । उण री माम जोर मू चा न ही । काना माय सुणीज ही एक आह ।

मन्क माथ मामे मू जावता मादकिल मवार घटी बजावतो जाव हो । घटी री आवाज मुणन महेंद्र रा हाम वावडियो । सोच्यो— अठ कठ कल्पना । प्रेस माय वठयो ह । महेंद्र हिताब ऊ धा लिख भारघो । माथो चकरी बम हूयोडो हो । मूना सो आख्या फाट-फाटन देय हा । छाती माय सुवा मण भार पडियो है । प्रेम र वारण माम मू डावडया गीत गावती नीमरी—

चा न चडया गिरनार किरत्या णळरहिया जी वळरहिया
जा वा ई रूपमा परै नघाय माऊनी मारण जा मारना ।

मूंगा है अर नो सस्ती । काम रा रिस्ती पट मू है । जक री मूळ जरत राग है । सामे माच बठी कल्पना रा मू-डो घणा साफ दीगवा लागया । णन जरत है म्हारी अर मन इण रा । दोनुवा री जरत मिल र एन नूवी जरत न जलम देव । म्हा दा या रा गमार अळगा अळगा है अर विस्वास सगळा सू ।

महे द्र र लिलाड माथ पसान री बूदा झाकवा लागया । बांन इहा मालम पडण लाग्यो क उण रा सगळा विस्वाम पसीन रा बूदा साग बवण लागया है । थोडा आस्वस्त हूयन प्लट री सगळी चाय एक गुटक र साग पीव न कप प्लट आळ माथ राह्या । जेय मू रुमाळ वादन लिलाड रगड रगड न पूछयो । आपरा सगळा विचार साफ करणा चाव हो । विचारा र भतूळिय न साफ कर र महेंद्र आठा मू सूय माथ एक चुम्बा लिया । कल्पना जा देवन सरमायगो महेंद्र री चेतना दाडवा लागी । च्छावा बळवता हूवती जाव हो । वो कल्पना न भीचणू चाव हा कसक भीचणी चाव हो जक मू सूयता एकाकार हूय जाव । उण रो मासल डील टूट टूट न पडवा लाग ।

ढळतो णिन टावरा र आवण री सनसो देव हा । टावरा रा आवणा ही सूयता रा ज त हा । जक सूया उतावळा हूय रया हा । मात्र री कडी महेंद्र री चेतना र काना माथ खडखडी ज ही । महेंद्र उठ न भागणो चाव हो पण पण उतर देव हा जण। बा णी भात पणिया रवणू चाव हा । ठोठ सूय माथ चुम्बन लयन चुप हा । हाथ मना धावरा सा कुर्सी र हाथ माथ हा । चेतना रो साकार रूप कुर्सी माथ पडियो हा । महेंद्र उठ न कल्पना कानी चाल्यो ।

काना र पन्ढ माथ ऐरण की मी चाट लागो । मोड रो कडी जार जोर सू खडखडीजी । कल्पना मोडा खोलण ताई गई अर महेंद्र एक सूयता रो बोध लिया

काकाजा, काकोजा र हाक मू सगळो घन गूजण लागया । महेंद्र नावण घर मायन मू-डो धायन पाछा जायो । भूड माथ तण्णा री ग री छिया घूमै हा । एक जळन छिया सू ग रा हूवता जाव हो ।

पाच वजण आळी ही । महेंद्र पाणी पो र प्रम काना टुरग्या । दाफारा जकी सडक आदमी रा चरण चूमन ताई तरस ही वा अजार मीनळा मू सरा वार हा । मिनवा रा रळो कीडी नाळ दाइ चाल हा । कपास जकाइ एन पल ठरणू चाव तो लार सू धक्का देव न लाग बीन आग टिपाय देव । लाचार

